# प्राच्य गुह्य ब्रह्मयोग

(शिव - शक्ति तंत्र पर आधारित विवाहित युगलों हेतु सिद्ध योग)

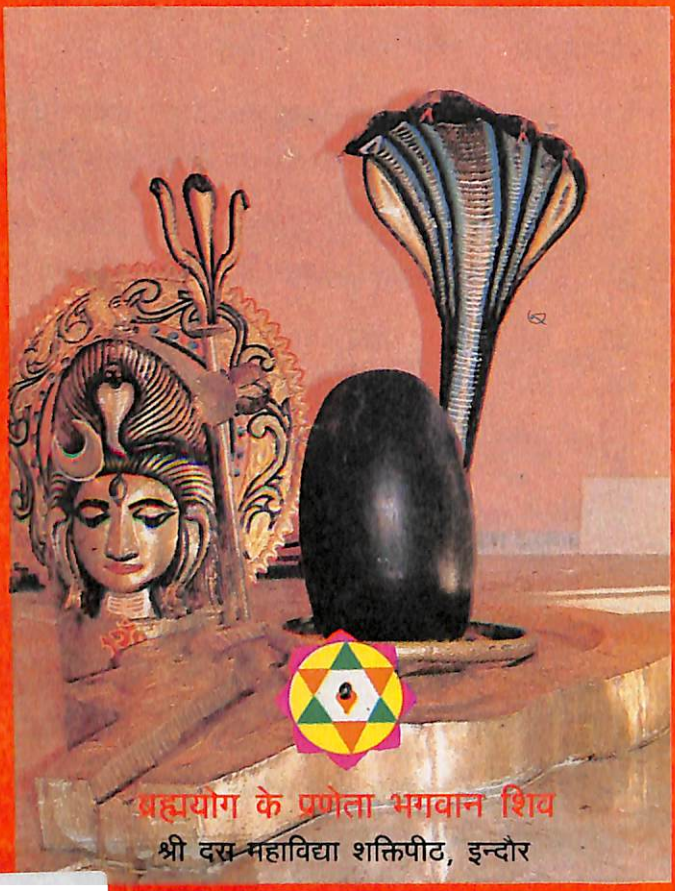


श्री महाविद्या मण्डलेश्वर
ब्रह्मयोगार्षि, ब्रह्म तंत्राचार्य, ब्रह्मयोगी
**स्वामी श्रीधरानन्द**
(डॉ. श्रीधर वाजपेयी)

मूल्य - रु. १०/-

## श्री महारुद्र स्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते महारुद्राय रुद्रणी – प्रियाय,
तेजो रूपाय जटाजूट – धराय चन्द्र – शेखराय।

भस्म – भूषिताय त्रिलोचनाय गंगा – धराय,
नीलकंठाय नागहाराय त्रिशूल – वर – धराय।

ह्रां ह्रीं ह्रौं दैत्य – दानव ग्रह बंधनाय,
क्रां क्रीं क्रौं भूत – प्रेत ग्रह बंधनाय।

श्रां श्रीं श्रौं शाकनी – डाकनी ग्रह बंधनाय,
द्रां द्रीं द्रौं काकनी – कामनी ग्रह बंधनाय।

ज्रां ज्रीं ज्रौं यक्ष – राक्षस ग्रह बंधनाय,
प्रां प्रीं प्रों क्षोभ – ताप ग्रह बंधनाय।

भ्रां भ्रीं भ्रौं चोर – वंचक ग्रह बंधनाय,
हौं जूं सः रोग – घात ग्रह बंधनाय।

ब्रां ब्रीं ब्रौं दुख – दारिद्र ग्रह बंधनाय,
घ्रां घ्रीं घ्रौं सर्व दुष्ट ग्रह बंधनाय॥

क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सर्वजनाम् वशमानय,
श्रीं ह्रीं क्लीं शक्तीनाम् आकर्षय आकर्षय।

मम शत्रून् मारय मारय चूर्णय चूर्णय,
सर्व जल – थल – नभ वासिन् मोहय मोहय।

ऐं ह्रीं श्रीं मम सौभाग्य – आरोग्य देहि देहि,
क्ष्रौं क्ष्रौं मम सर्व – सुख – शांति कुरू कुरू स्वाहा।
दशवारं जपित्वा सर्व सुख – शांति भवति नान्यथा।

॥ इति श्री श्रीधरानंदविरचितं श्रीमहारुद्र स्तोत्रं संपूर्णम्॥

ST-99

# प्राच्य गुह्य ब्रह्मयोग


लेखक

ब्रह्मयोगी, ब्रह्म तंत्राचार्य, श्री महाविद्या मण्डलेश्वर

**स्वामी श्रीधरानंद**

(डॉ. श्रीधर वाजपेयी, एम.एस. - सी., पी - एच.डी.)

मानद् प्रोफेसर, एप्लाइड गणित, इंस्टीट्यूट ऑफ बेसिक रिसर्च,
पाम हारबर, **अमेरिका**

एवं

मानद् प्रोफेसर, गणित विभाग,
इन्स्टीट्योटो पेर ला रिसरका डि बेस, मोलिस, **इटली**

**भूतपूर्व**

डीन - विज्ञान संकाय, यूनिवर्सिटी ऑफ साईंस एण्ड टेक्नालाजी,
पोर्ट हरकोर्ट, **नाइजेरिया**

एवं

प्रोफेसर - गणित विभाग, बहरीन विश्वविद्यालय, **बहरीन**

एवं

प्रोफेसर विजिटान्टे, सांता काटरिना विश्वविद्यालय, **ब्राजील**

एवं

अध्यक्ष - गणित विभाग, बेनिन विश्वविद्यालय, **नाइजेरिया**

एवं

अध्यक्ष - गणित विभाग, नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ लेसोथो, रोमा, **लेसोथो**

एवं

प्रोफेसर - गणित विभाग, युनिवर्सिटी ऑफ टेक्नालाजी, बगदाद, **ईराक**



**प्रकाशक**

**श्री महाविद्या प्रकाशन**

**महाविद्या मण्डल (श्री दस महाविद्या शक्तिपीठ),**
**तेजाजी नगर, पोस्ट कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर - 452 020 (म.प्र.)**

---

**पुस्तक प्राप्ति स्थान -**

**सरदार सोहनसिंह बुक सेलर**

34, बक्षी गली, इन्दौर - 452 004 (म.प्र.)

# प्राचीन भारत के लुप्त
# श्री दस महाविद्या शक्तिपीठों
# के पुनर्निर्माण में सहयोग की अपील

प्राचीन भारत में **श्री दस महाविद्याओं (Ten Great Enlightenments)** के 108 शक्तिपीठ थे। कालान्तर में भारत में श्री महाविद्याओं के मंदिरों के निर्माण का क्रम चलता रहा और इस प्रकार सारे देश में श्री महाविद्या मंडलों की संख्या 1001 हो गई थी। श्री महाविद्याओं की कृपा से ही प्राचीन भारत ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल्य, धन-धान्य, सुख-शांति आदि में जगत-शिरोमणि हो गया था। शनैः शनैः हमारे देश का पतन प्रारंभ हुआ तो श्री महाविद्याओं के शक्तिपीठ भारत से लुप्त होते गये। कामरूप का श्री महाविद्या शक्तिपीठ सबसे अन्त में नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गुरू गोरखनाथ के समय में लुप्त हो गया था। अब भारत वर्ष पर महाविद्याओं के पुनः कृपावंत होने का समय आ गया है। इसका प्रमाण विश्व के प्रथम दस महाविद्या शक्तिपीठ का कामेश्वर महादेव, नंदीश्वर, सर्पराज, विद्यापति गणेश, संकटमोचन हनुमान के साथ इन्दौर (कस्तूरबा ग्राम) में प्राकट्य है। निकट भविष्य में भारत के अन्य क्षेत्रों में भी श्री महाविद्याओं के शक्तिपीठों और मंदिरों की स्थापना होगी और हमारा देश भारत पुनः विद्या, कला, कौशल्य आदि में विश्व का सिरमौर बन जावेगा।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में श्री दस महाविद्याओं के 108 शक्तिपीठों के निर्माण हेतु स्वामी श्रीधरानंद ने **''प्राचीन भारत के लुप्त श्री दस महाविद्या शक्तिपीठों का पुनर्निर्माण''** नामक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक की चार लाख प्रतियाँ छपवाने की योजना है। जिसमें से 2 लाख पुस्तकों के फरवरी 98 में हरिद्वार में सम्पन्न होने वाले कुंभ मेले में निःशुल्क वितरण की योजना है। इस पुनीत कार्य के सम्पन्न करने हेतु लगभग चार लाख रुपयों की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त श्री दस महाविद्याओं के 108 शक्तिपीठों के पुनर्निर्माण के प्रचार-प्रसार हेतु भी कुछ धन की आवश्यकता होगी। जो श्रद्धालुजन इस पुनीत कार्य में सहयोग के इच्छुक हों वे कृपया अपनी श्रद्धानिधि **'श्री महाविद्या मंडल ट्रस्ट'** के नाम से स्वामी श्रीधरानंद, श्री दस महाविद्या शक्तिपीठ, तेजाजी नगर, कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर-452 0202 के पते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

विनीत

**कुँजीलाल गोयल, डॉ. बसन्तकुमार जोशी, उमेशनारायण मिश्र**

**श्री दस महाविद्या शक्तिपीठ**

**तेजाजी नगर, खंडवा रोड, कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर - 452 020**

# प्राच्य गुह्य ब्रह्म योग

## प्रस्तावना

इस योग में पति - पत्नी काम शक्ति (स्थूल एवं सूक्ष्म रूप में) के अनुशासित दोहन द्वारा आत्म बोध एवं चिन्मय आनन्द को प्राप्त करके साक्षात्कार करते हैं। कुतूहल का विषय है कि इस योग का परम्परागत योग साहित्य में कहीं भी उल्लेख नहीं है। इस योग के विषय में जो कुछ मैंने लिखा है, वह मेरी गुरूदेवी की कृपा से ध्यान एवं अन्तर्प्रकाश के क्षणों में स्वानुभूत ज्ञान है। इस पुस्तक की रचना उन सिद्ध योगिनी के शक्तिपात और आदेश से की गयी है, जिन्होंने मुझे व मेरी पत्नी को 5 जुलाई 1993 को मणिकर्णिका घाट, वाराणसी में लगभग 5 मिनट एक वृद्धा रूप में दर्शन देकर कृतार्थ किया था।

ब्रह्म योग, सब योगों और काम तंत्र का दिव्य समाकलन है। इस योग के अभ्यास के समय ब्रह्म मिथुन आसनों, प्राणायामों, मुद्राओं, बाँधों आदि का स्वतः और सहज संचालन और उपयोग करने लगते हैं और बिना किसी प्रयत्न के इनका लाभ प्राप्त करते रहते हैं।

ब्रह्म योग धर्म, अर्थ और काम के आदर्श समन्वय का योग है। ब्रह्म योग एक सुनियोजित पद्धति से योग, कर्म और भोग का संगम प्रस्तुत करता है। जो विवाहित युगल इस त्रिवेणी में श्रद्धा पूर्वक स्नान करता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

ब्रह्म योग ऐसे व्यक्तियों को आकर्षित करता है, जिनकी मान्यता है कि प्रेम दिव्यानन्द की अनुभूति का अनंत सागर है। यद्यपि वे प्रेम का आनन्द लेते हैं, परन्तु अनुभव करते हैं कि अभी उन्हें प्रेम के दिव्यानन्द की अनुभूति का अनुभव करना शेष है। उनकी यह प्रवृत्ति उनके सृजनात्मक और नवीनतावादी स्वभाव की द्योतक हैं। ब्रह्म योग से प्राप्त भावातीत आनन्द, काम शक्ति को सृजनात्मक शक्ति और प्रज्ञा शक्ति में परिवर्तित करता है, जिससे मनुष्य कला - कौशल, शिल्प, चित्रकारी, नृत्य, गायन, साहित्य, विज्ञान, वाणिज्य, उद्योग, समाज सेवा, राजनीति, आत्म साक्षात्कार आदि के क्षेत्रों में महान उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्म योग सार्वभौमिक बोध और प्रज्ञा की कुंजी है, जो अंतर्प्रज्ञा, सम्यक्ज्ञान और दैवी बोध के द्वार को हमारे लिये खोल देती है।

पूर्व काल में धार्मिक और सामाजिक बंधनों के कारण अधिकांश दम्पति हर परिस्थिति में साथ - साथ रहते थे। दुर्भाग्यवश वर्तमान काल में विवाह - विच्छेदों की संख्या दिन - प्रतिदिन बढ़ रही है। कानूनी विवाह - विच्छेदों के अतिरिक्त मनौवैज्ञानिक

और संवेगात्मक विवाह-विच्छेदों की संख्या हमारे देश में अत्यधिक बढ़ रही है। इस प्रकार के विवाह-विच्छेद में पति-पत्नी एक ही छत के नीचे रहते हैं, किन्तु विवाह के सभी कर्त्तव्यों और दायित्वों से मुक्त रहते हैं। इस प्रकार के परिष्कृत विवाह-विच्छेद के कारण घर का वातावरण परिवार की सुख-शांति के लिये बड़ा घातक होता है। शायद ऐसा विवाह-विच्छेद कानूनी विवाह विच्छेद की अपेक्षा, बच्चों के लिये विशेष हानिहारक होता है।

विवाह विच्छेद के मुख्य कारण बेमेलपन, यौन समस्यायें, विश्वासघात, दाम्पत्यच्युति, विवाहेत्तर संबंध, उन्मुक्त यौन, पारस्परिक अभिव्यक्ति और चर्चा की कमी या लोप, अज्ञान, आयु का बढ़ना, बच्चों का आगमन, एक साथी का दूसरे की आवश्यकता और भावनाओं को न समझना आदि। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के कारण भी कुछ दम्पत्ति अपने यौन-जीवन में परिवर्तन और विविधता की लालसा करने लगते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है, कि विवाह केवल वैध यौन-अभिव्यक्ति का साधन ही नही है, बल्कि यह पति-पत्नी के शारीरिक और मानसिक व्यक्तित्वों के सम्पूर्ण एकत्व का साधन भी है।

ब्रह्म योग का लक्ष्य केवल संभोग के परम आनन्द का अनुभव ही नही है, बल्कि वह दैवी ''एकत्व'' है, जिसकी अनुभूति दम्पति संभोग के द्वारा प्राप्त करते हैं। यह संभोग से समाधि का पवित्र मार्ग है। यह ''एकत्व'' सहानुभूति, तदानुभूति, सार्वभौमिक प्रज्ञा, दिव्य बोध, सम्यक् अभिव्यक्ति, दया, क्षमा, अंतर्ज्ञान, आत्म बोध, आत्म गौरव, आत्म सन्मान और दिव्यानुभूति का मूल स्रोत है। इस ''एकत्व'' की अवस्था में दम्पति के अहं और स्वार्थ के मूल ''मैं'' और ''तुम'' परम अनुराग रूप ''हम'' में लुप्त हो जाते हैं। जब ब्रह्म केलि की अवधि एक अनुशासित और नियंत्रित विधि से दीर्घ कर दी जाती है, तब ब्रह्म मिथुन इस दीर्घ अवधि में पारस्परिक बोध और परमानन्द की प्राप्ति के साथ-साथ आयु का स्तंभन भी करते हैं।

मनौवैज्ञानिक नपुंसकता दुखी वैवाहिक जीवन का महत्वपूर्ण कारण है, जिसका उपचार ब्रह्म योग के अभ्यास द्वारा आसानी से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनेक अन्य यौन व्याधियों की चिकित्सा ब्रह्म योग से संभव है। यौन और विवाह हमारे जीवन के अविकल अंग है, और इस विकलन के विषय में अभी गहन शोध और अन्वेषण की आवश्यकता है। ब्रह्म योग इस अविकलन का एक हल है। ब्रह्म योग दंपति के नाड़ी संस्थान का मनोदैहिक, मनोवैज्ञानिक और अतींद्रिय उपचार कर, उनकी यौन व्यधियों को दूर करता है, और अभिवृति को प्रखर करता है।

शाक्तेश और शैवेशी द्वारा क्रमशः दस-शक्ति और दस शिव ध्यान की

क्रियायें यौन विविधता और मनोरंजन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। जो वैवाहिक बंधन को एक दैवी परिकल्पना के चिर और शाश्वत माध्यम द्वारा सुदृढ़ करती हैं। तृप्त ब्रह्म मिथुनों का वैवाहिक जीवन सुखी और सुदृढ़ होता है, सुखी और सुदृढ़ वैवाहिक जीवन सुखी और सुदृढ़ परिवार बनाते हैं, सुखी और सुदृढ़ परिवार सुखी और सुदृढ़ समाज बनाते हैं, सुखी और सुदृढ़ समाज महान राष्ट्र बनाते हैं, और सुखी और सुदृढ़ राष्ट्र ही विश्व शांति और संवृद्धि के निर्माता होते हैं। पति-पत्नी का विनिमय (आदान-प्रदान), विवाह विच्छेद, उन्मुक्त यौन संबंध तथा दुखी ओर अस्थिर विवाहों के अन्य उपोत्पाद ब्रह्म योग के प्रचार-प्रसार और प्रयोग से स्वयं लुप्त हो जावेंगे।

यह सत्य है कि अनुशासित संभोग और आध्यात्मिक उन्नति एक दूसरे से संबंधित है। धार्मिक और अतींद्रिय ज्ञान के साहित्य का कुछ भाग तथा ललित कलाओं की अनेक कृतियाँ श्रृगांरिक और रत्यात्मक हैं। इनमें ब्रह्म-मिलन (आत्मा से परमात्मा का मिलन) को प्रतीकात्मक रूप में नर-नारी के मिलन द्वारा प्रदर्शित किया गया है। भक्तगणों का उन के आराध्य देवों से आध्यामिक विवाह, मीरा जैसी भक्तों के भक्ति-गीत, दैवी प्रेमियों के संभोगरत चित्र और मूर्तियाँ, भगवान कृष्ण की आराधना, योगिनी, यक्षणी, किन्नरी, यक्ष, गंधर्व आदि की परिकल्पना तथा तंत्र योग, ब्रह्म योग आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो श्रृंगारिक और रत्यात्मक विधाओं के द्वारा आध्यात्मिक उन्नति का समर्थन करते हैं।

ब्रह्म योग मानव को दिव्य कामानन्द का उपहार प्रदान करता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण और मूल्यवान उपहार है। क्योंकि काम-कुंठा अनेक सामाजिक विकृतियों और दुराग्रहों को जन्म देकर उसे पतन के मार्ग की और अग्रसर करती है।

ब्रह्म योग के साधकों के हेतु निम्नलिखित निर्देश अत्यंत महत्वपूर्ण हैं:-

1. ब्रह्म केलि का अभ्यास बिना मंत्र जाप (अथवा स्तोत्र पाठ) और ब्रह्म ध्यान के न करें। अध्याय 1 में प्रस्तुत ब्रह्म केलि हेतु दिये गये निर्देशों का पालन करें।
2. प्रारम्भ में ब्रह्म केलि की अवधि को दीर्घ करना सरल नहीं होता है, आप अनेक बार असफल हो सकते हैं। आपको इन प्रारम्भिक असफलताओं को आपकी ब्रह्म योग की सिद्धि हेतु स्वीकार करना होगा। आप हमारी पुस्तक ''काम तंत्र'' में दिये गये ''दीर्घ संभोग और शुक्र स्तंभन तंत्र'' का गंभीरता पूर्वक अध्ययन करें।
3. अभ्यास, श्रद्धाभक्ति और समर्पण ब्रह्म योग की सिद्धि का रहस्य है।
4. हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि हमारे समाज में पुरुष अपनी काम

शक्ति के प्रति अत्यंत संवेदनशील और भावुक होते हैं। ब्रह्म मिथुन को एक दूसरे की आवश्यकताओं, भावनाओं, संवेगों, तथा मानसिक और शारीरिक क्षमताओं और मर्यादाओं के प्रति सद्भाव पूर्वक जागरुक, सतर्क और सावधान रहना चाहिये। इस प्रकार के सम्यक् व्यवहार का प्रभाव ब्रह्म मिथुन के मन और मस्तिष्क को सदैव हरा-भरा रखता है और उनमें नवजीवन का संचार करता रहता है। ब्रह्म मिथुन के शरीर और मन का एकीकरण उन्हें जीवन के सुख-सौख्य और सफलता की कुँजी ''एकत्व'' का उपहार प्रदान करता है।

5. ब्रह्म योग के अभ्यास हेतु आपको अपनी जीवन शैली को अधिक परिवर्तित करने की आवश्यकता नहीं है। आप अपनी रूचि के अनुसार भोजन कीजिये, कार्य कीजिये, दूसरे लोगों से सम्बन्ध रखिये, परन्तु तब आप एक अविराम आनंद, स्फूर्ति और संतोष की स्थिति का अनुभव करते रहेगें।

याद रखिये कि ब्रह्म योग का किसी जाति, धर्म अथवा दर्शन से कोई विरोध नहीं है। अपितु ब्रह्म योग का साधक अपने धर्म अथवा दर्शन का सच्चा अनुयायी बन जाता है। यदि आप चाहते हैं, तो आप ब्रह्म योग के अभ्यास के समय इस पुस्तक में दिये गये मंत्रों के अतिरिक्त किसी भी धर्म और सम्प्रदाय के मंत्रों का जाप कर सकते हैं। ब्रह्म योग एक धर्म निरपेक्ष योग है।

अध्याय 3 में हमने उन मूलभूत ब्रह्म मंत्रों को प्रस्तुत किया हैं, जो किसी तांत्रिक अथवा अन्य गुह्य साहित्य में उपलब्ध नहीं है। यद्यपि इनके उद्भव के अंकुरों का दर्शन चित्-विलास, काम कला विलास, शक्ति संगम, वृहद अरण्यक उपनिषद आगम, वेदांत, योग आदि तांत्रिक और आध्यात्मिक ग्रंथों के गंभीर अध्ययन द्वारा किया जा सकता है। इस अध्ययन में दिये गये सब मंत्रों के ऋषि स्वामी श्रीधरानंद हैं।

ब्रह्म योग की सफल साधना हेतु प्राचीन ऋषियों, मुनियों और आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काम कला और रति विज्ञान का आध्यात्मिक, नैतिक, वैज्ञानिक और प्रयोगात्मक वर्णन हमारी पुस्तक Kama Tantra (काम तंत्र) में दिया गया है। वास्तव में काम तंत्र, ब्रह्म योग का भाग 2 है और उसका परिपूरक ग्रंथ है।

मैं अपनी धर्मपत्नी शैवेशी, कमल कुमारी (माँ कमलानंद), ज्येष्ठ पुत्र पवन कुमार B, Tech., M.B.A., M.S., M.U.P. (New York) तथा कनिष्ठ पुत्र संजय कुमार B. Pharma., M.S. M.B.A., Ph. D. (Ohio) का पुस्तक को संवारने और प्रकाशन में सहयोग हेतु आभारी हूँ।

**स्वामी श्रीधरानंद**

**(डा. श्रीधर वाजपेयी)**

## प्राच्य गुह्य ब्रह्म योग – 1

# ब्रह्म योग (Cosmic Yoga)

### (पति – पत्नी हेतु परमानंद और सुख – शांति का मार्ग)

ब्रह्म योग विवाहित युगलों द्वारा काम शक्ति का स्थूल एवं सूक्ष्म रूप में दोहन कर सार्वभौमिक बोध, अंतर्प्रज्ञा, सम्यक् ज्ञान, दैवी बोध, आत्म साक्षात्कार, ब्रह्मानंद, ब्रह्म एकत्व और सुख-शांति की प्राप्ति का दिव्य योग है। योग की अन्य विधाओं के अनुरूप ब्रह्म योग का उद्देश्य भी आत्मा तथा परमात्मा के मिलन की उत्कृष्ट इच्छा रखना, आत्म ज्ञान तथा आध्यात्म में परिपूर्णता प्राप्त करना, अगाध संयम एवं सेवा भाव रखते हुये शांत भाव से सर्वत्र आनन्द विखेरना है। दंपति को आत्मा और परमात्मा के एकत्व का साक्षात्कार करने के लिये सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिये अर्थात् उसे ब्रह्म एकत्व की अनुभूति हेतु सदैव क्रियाशील रहना चाहिये।

इस योग में ब्रह्म मिथुन (Cosmic Couple) का अविर्भाव पति-पत्नी के रूप में किया गया है, तथा पत्नी को शैवेशी (शिव-पुरूष तत्व आराधक) और पति को शाक्तेश (शक्ति-स्त्री तत्व आराधक) कहा जाता है। ब्रह्म मिथुन का ध्येय ब्रह्म केलि (विवाहित संभोग) द्वारा ब्रह्म एकत्व (Cosmic Oneness) का साक्षात्कार, ब्रह्म ध्यान (Cosmic Meditation) अर्थात् संभोगरत ध्यान द्वारा प्राप्त करना है। **ब्रह्म योग ब्रह्म मिथुन द्वारा ध्यान साधना का तंत्र है, अर्थात् संभोग से समाधि का योग है।**

**इस पुस्तक में विभिन्न स्वभाव एवं आध्यात्मिक स्तर वाले सभी स्त्री – पुरूषों के द्वारा साध्य ब्रह्मयोग की सरल विधियों एवं युक्तियों का वर्णन है। जिनका लक्ष्य है कि जीवन में किया गया प्रत्येक कार्य आध्यात्मिक कार्य के रूप में किया जाय, जो परम ब्रह्म द्वारा इच्छित एवं संचालित है। इस योग में पति – पत्नी काम शक्ति (स्थूल एवं सूक्ष्म रूप में) द्वारा आत्म बोध एवं चिन्मय आनन्द को प्राप्त करते हैं। कुतूहल का विषय है कि इस योग का परम्परागत योग साहित्य में कहीं भी उल्लेख नहीं है। इस योग के विषय में जो कुछ मैनें लिखा है, वह मेरी गुरूदेवी की कृपा से ध्यान एवं अन्तर्प्रकाश के क्षणों में स्वानुभूत ज्ञान है।**

**ब्रह्म केलि (Cosmic Sex)**

इस योग में काम क्रिया एक पवित्र संस्कार के रूप में की जाती हैं, परन्तु इसके पूर्व शारीरिक तथा मानसिक तैयारी उचित मात्रा में की जानी चाहिये। साधक को यथासंभव बिना स्खलित हुए, दीर्घ समय तक संभोग रत रहने की शक्ति अर्जित कर लेना आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो स्खलन होना ही नहीं चाहिये। इससे जो शक्ति एवं उर्जा उत्पन्न होती है उसको शरीर के भीतर

ही चेतना का प्रकाश फैलाने हेतु प्रयोग किया जाना चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आसन, प्राणायाम, ध्यान, मन्त्र जाप, यन्त्र दर्शन तथा प्रार्थना इत्यादि का अभ्यास करना आवश्यक है।

ब्रह्म योग में काम क्रीड़ा हेतु युगल पति-पत्नी ही होना चाहिये। इस योग में उन्मुक्त (बंधन रहित) काम की आज्ञा नहीं है। यह योग केवल उन्हीं दम्पतियों के लिये हैं जो वास्तव में काम शक्ति का उपयोग करके समाधि प्राप्त करने के इच्छुक हैं तथा जिन्हें सम्भोग की प्रारम्भिक असफलताओं का कोई भय नहीं होता है। साधनारत युगल के पास अपेक्षित समय होना चाहिये तथा उन्हें ''स्खलन शीघ्र हो जाये'' इस प्रवृत्ति से मुक्त होना चाहिये। ब्रह्म योग का अन्तिम लक्ष्य काम शक्ति के उपयोग द्वारा ज्ञान एवं परम समाधि अवस्था प्राप्त करना है। इसके लिये कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है, क्योंकि यह समय से परे हैं। अतः साधनारत युगल यदि संसार की समरूप एकता की खोज करना चाहते हैं तो उन्हें किसी भी प्रकार के समय अथवा अन्य बंधनों से पूर्णतः मुक्त रहना चाहिये। यह सत्य है कि हम ऐसे समाज में जीते हैं, जो समय के बंधनों से जकड़ा हैं तथा इसी कारण हमारे लिये समय सीमा के परे जाना संभव नहीं हो पाता, परन्तु इन सब सीमाओं के होते हुए भी हमें भरपूर ऐसा प्रयास करना चाहिये कि अधिक से अधिक हम समय सीमा के बंधन से मुक्त हो सकें।

यह मान्य तथ्य हैं कि किसी भी योग की सफलता एवं पूर्णता के लिये, उसकी समस्त क्रियाएँ सहज होना चाहिये। तात्पर्य यह है कि योग क्रियाएँ सप्रयास न होते हुए स्वयमेव एवं सहज होनी चाहिये। वास्तविक योग वह प्रयास है जो बिना किसी प्रयास के होता है। चूंकि ब्रह्म योग भी एक योग है अतः सम्भोगरत युगल के मन तथा शरीर पूर्णतः तनाव रहित होने चाहिये। इस क्रिया के लिये प्रबल इच्छा शक्ति तथा दृढ़ निश्चय होना चाहिये, परन्तु मानसिक अथवा शारीरिक तनाव तनिक भी नहीं होना चाहिये। यदि तनाव रहता है, तो साधक को थकान का अनुभव होता हैं तथा उसकी शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है। उदाहरणार्थ, यदि कोई अपनी स्तम्भन शक्ति बढ़ाने हेतु श्वास रोकता है तथा अपने पुट्ठों को संयत कर लेता है, तो उसका स्खलन अपेक्षा से पूर्व ही हो जायगा, अतः साधक को ऐसा कोई प्रयास नहीं करना चाहिये। इसके विपरीत यदि साधक धीरे तथा गहरे श्वास ले और पुट्ठों की माँस पेशियों को ढीली छोड़ दे तो उसकी स्तम्भन शक्ति बढ़ेगी तथा स्खलन पर उसका नियंत्रण हो सकेगा।

सम्भोग में युगल को प्रत्येक क्रिया जितनी सम्भव हो सके उतनी लालित्य व लयबद्ध रूप से तथा सहजता पूर्वक करना चाहिये। इससे काम शक्ति का अपव्यय नहीं होगा तथा उसका उपयोग आध्यात्मिक उन्नति में हो सकेगा। यह क्रीड़ा नहीं, एक दैवी नृत्य है जिसमें युगल को हर संभव तन्मयता के साथ

खो जाना चाहिये।

जब युगल ब्रह्म केलि की सहज स्थिति प्राप्त कर लेते हैं, तो उनकी समय की चेतना लुप्त हो जाती है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ब्रह्म केलि में समय सीमा अधिक से अधिक होने के साथ ही सहज तथा स्वचलित होनी चाहिये।

## ब्रह्म केलि की एक सरल विधि

इस परिच्छेद में मैं अति संक्षेप में ब्रह्म केलि की एक सरल विधि का वर्णन कर रहा हूँ।

यहाँ यह याद दिलाना महत्वपूर्ण है कि किसी भी प्रकार के ध्यान के पूर्व उपयुक्त ध्यानासन का चुनाव करके श्वास को नियंत्रित करना तथा उसकी गति धीमी करना आवश्यक है। इससे मन शांत होता है तथा ध्यान करने की क्षमता बढ़ती है।

लिंग के योनि में प्रवेश के पश्चात् युगल को चाहिये कि किसी सुविधापूर्ण सम्भोग आसन में स्थित हो जायें। आसन में पूर्णत: अवस्थित होने के पूर्व किसी भी प्रकार का अंग संचालन आरम्भ नहीं करना चाहिये। आसन में भली भाँति स्थित हो जाने के पश्चात् उन्हें गहरे तथा लयबद्ध श्वास लेना चाहिये। इसके पश्चात् मन्त्रोच्चार के साथ ही युगल को अपना ध्यान शक्ति-शिव यन्त्र पर केन्द्रित करना चाहिये। यह ध्यान मूलाधार चक्र अथवा गुप्तागों के आसपास होना चाहिये। इसके पश्चात् हल्के एवं धीमें धीमें अंग संचालन किया जा सकता है।

इस स्थिति में स्तम्भन का समय बढ़ाना मात्र अभ्यास तथा तकनीकी रह जाता है। शक्ति एवं शिव की कृपा से तथा मन्त्रोच्चारण एवं यन्त्र दर्शन से, साधारणतया सम्भोग की इस विधि में पूर्णता प्राप्त होती है। शक्ति-शिव की कृपा से कुछ ही माह पश्चात् मन पर अधिकार पाने तथा स्खलन देर तक रोकने में सफलता प्राप्त हो जाती है। अंग संचालन यदि हल्का एवं धीमा हो तो युगल को स्खलन के ठीक समय का ज्ञान हो जाता है। ऐसा क्षण आने के पूर्व ही कुछ पल के लिये हिलना डुलना बंद कर देना चाहिये। श्वास धीमे तथा गहरे लेना चाहिये। स्तम्भन बढ़ाने तथा स्खलन रोकने में, श्वास क्रिया को नियंत्रित रखना प्रत्येक स्तर पर आवश्यक है। यह सरल प्रक्रिया ब्रह्म केलि का समय बढ़ाने में पर्याप्त रूप से सहायक होती है। इस क्रिया के बीच पति तथा पत्नी किसी भी यन्त्र का किसी भी चक्र में अथवा शरीर के किसी भी भाग में तथा शरीर के बाहर किसी अन्य स्थान पर भी, ध्यान करने के लिये स्वतंत्र हैं। मन्त्र जाप तथा यन्त्रों का सतत् दर्शन समूची क्रिया में आद्योपांत किया जाना चाहिये।

आरम्भ में इस प्रक्रिया का अनुसरण करना युगल के लिये कठिन हो सकता है। परन्तु एक बार प्रक्रिया के स्थापित हो जाने के पश्चात् उनका मन

सहज रूप से अनायास ही ध्यान मग्न हो जाता है। **ब्रह्म केलि में सिद्ध, गुरु द्वारा प्रदत्त शक्तिपात् से भी प्राप्त की जा सकती है।**

## ब्रह्म केलि का विवेचन

समस्त सांसारिक रचना दो विपरीत शक्तियों के सन्तुलन का परिणाम है जो संकेत रूप में शिव तथा शक्ति के मिलन के फलस्वरूप जन्मती है। हमारा चेतन मन इस यथार्थ को समग्रता पूर्वक अनुभव करने में समर्थ नहीं है। इस सत्य का उद्घाटन हमारे अवचेतन मन की सहज ज्ञान शक्ति द्वारा ही संभव है। इस सहज शक्ति का उपयोग, सम्भोग की चरम अवस्था में काम शक्ति के दोहन एवं रुपान्तर के लिये किया जा सकता है, जब वर्जना के समस्त बंधन तोड़कर हमारे मन का, अवचेतन से साक्षात्कार होता है। ब्रह्म मिथुन जब रचना संसार के परम आनन्द में लीन होते हैं, तब दोनों का अहं सर्वव्याप्त एकमेव ब्रह्म में लीन हो जाता है। अत: ब्रह्म योग में काम के परम आनन्द का उपयोग अहं के संरक्षक समस्त बंधनों को तोड़ने में किया जाता है, जिससे हमारे अवचेतन की अनन्त शक्ति का द्वार इस योग में विलम्बित काम क्रिया द्वारा खुल जाता है। इस योग में विलम्बित काम क्रिया द्वारा अवचेतन मन से एक नियंत्रित एवं अनुशासित परन्तु दीर्घ अवधि का संपर्क स्थापित किया जाता है, अत: ब्रह्म मिथुन सतत् इस समष्टि की एकता का अनुभव करता है। इस समष्टि की एकता का ज्ञान स्वयं अपने आप में एक परमानन्दकारी एवं दैवी अनुभव हैं, तथा इससे इस संसार की समस्त चेतना का एक आनन्ददायी दर्शन प्राप्त होता है।

### ब्रह्म योग का वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष

साक्षात्कार हेतु ब्रह्म योग विधि प्रथम दृष्टि में अन्य योग विधियों से ठीक विपरीत जान पड़ती है, परन्तु यदि गंभीर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट हो जायगा कि ब्रह्म योग का लक्ष्य भी वहीं है जो अन्य योगों का है, केवल मार्ग में भिन्नता अवश्य है। सचमुच यदि देखा जाए तो ब्रह्म योग का मार्ग अत्यन्त वैज्ञानिक है। यह मार्ग उन साधकों के लिये अत्यंत उपयोगी है, जो काम का त्याग या तो नहीं कर सकते अथवा करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि या तो वे पारिवारिक बंधनों से जकड़े हुए हैं अथवा स्वभावत: काम के आकर्षण में हैं। ब्रह्म योग कहता है, **''यदि तुम काम प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर सकते तो न करो परन्तु उसका उपयोग परमात्मा की प्राप्ति हेतु करो।''** काम को केवल मनोरंजन मात्र मत समझो वरन् उसका उपयोग आध्यात्मिक सोपान पर चढ़ने के लिये करो। काम के प्रति उच्च जागरुकता को अध्यात्म के प्रति जागरुकता में रूपान्तरित करने का प्रयत्न करो। ब्रह्म केलि, जप, ध्यान, यन्त्र, प्रार्थना इत्यादि से उत्पन्न जागरूकता, अन्तत: साधक को ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा देती है, जहाँ उसकी सांसारिक काम क्रीड़ा से आसक्ति ही समाप्त हो जाती है। इसके फलस्वरूप काम वासना सतत् उसके मन को विचलित नहीं करती, परन्तु जब उसे तीव्र

कामेच्छा होती है, तो वह उसे दबाने की अपेक्षा उसको अपना आध्यात्मिक स्तर बढ़ाने में उपयोग कर लेता है।

यह सदैव ध्यान में रखना चाहिये कि ब्रह्म योग बंधन मुक्त काम (उन्मुक्त काम) की आज्ञा नहीं देता, वह तो काम शक्ति के नियमन एवं उपयोग हेतु कुछ विशेष नियमों का प्रतिपादन करता है। ब्रह्म केलि पवित्र एवं व्यभिचार रहित रूप में तथा बिना स्खलित हुए किया जाता है, जिसके लिये दृढ़ इच्छा शक्ति तथा स्नायविक नियंत्रण आवश्यक है।

**विवाहित युगलों हेतु सर्वश्रेष्ठ योग**

आज के संसार में स्त्री-पुरुष अन्य योगों का अभ्यास सरलता से नहीं कर सकते, परन्तु कई ऐसे हैं, जिन्हें सरलीकृत ब्रह्म योग की विधियों द्वारा सुख, शांति व उन्मुक्ति प्राप्त हो सकती है। अन्य योगों में, काम शक्ति को मानसिक तथा शारीरिक शक्ति में रूपान्तरित करने का कार्य कई वर्जनाओं सहित सीधे किसी गुरु के मार्गदर्शन में किया जाता है। काम का दमन हानिकारक है, इससे कड़वाहट, दुःख तथा कई मानसिक तथा शारीरिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं। काम शक्ति का रूपान्तरण कठिन है, अतः इस विधि का उपयोग तभी करना चाहिये जब काम शक्ति की निःसृति हेतु अन्य कोई साधन अथवा मार्ग उपलब्ध न हो। ब्रह्म योग द्वारा अपनी काम शक्ति का सदुपयोग साधारण नर नारी, अपेक्षा कृत अधिक सरलता से कर सकते हैं, क्योंकि इससे वे काम के दबाव से तो मुक्त होते ही हैं, साथ ही उनकी मानसिक एवं शारीरिक शक्ति भी बढ़ती है। अधिकतम स्त्री-पुरुषों के लिये काम सबसे बड़ा संवाहक बल है, अर्थात् संसार की गति के लिये आवश्यक बल है, तथा इस बल का उपयोग ब्रह्म योग में आत्म साक्षात्कार हेतु किया जाता है।

**आधुनिक युग की चुनौतियों और व्याधियों का सामना ब्रह्म योग से करिये**

विज्ञान और तकनीक के आधुनिक युग में अधिकांश लोग धन, भौतिक समृद्धि, शक्ति तथा पद की कामना करते हैं। किन्तु इसके विपरीत वे मानसिक अशान्ति, उच्च रक्तचाप, अल्सर, हृदयाघात और अन्यान्य रोगों से पीड़ित रहते हैं। वे असुरक्षा, चिन्ता, दबाव, तान और तनाव, जो विज्ञान और तकनीक के उत्पाद हैं, के बीच जीवन व्यतीत करते हैं। स्वास्थ्य तथा औषधि विज्ञान के क्षेत्रों में हुई आश्चर्यजनक खोजों के उपरांत भी विज्ञान तथा तकनीकी के इन उत्पादों के कारण आयु सीमा घट गयी है। कई लोग दूरदर्शन, सिनेमा, क्लब, शराब और अन्य आधुनिक मनोरंजन के साधनों में आनन्द की खोज करते हैं, किन्तु किसी भी प्रकार के आनन्द की प्राप्ति उनके लिये एक भ्रम सिद्ध होती है। शायद आज हमारे सन्मुख सबसे बड़ी चुनौती मानव की सुख-शांति हेतु नवीन योगिक विधाओं तथा क्रियाओं का विकास करना है। हम वर्तमान युग की चुनौतियों और व्याधियों से मुक्ति हेतु और उनके योजनाबद्ध मुकाबले के लिये ब्रह्म योग की विधाओं को प्रस्तुत कर रहे हैं।

चिरन्तन आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति का मार्ग ब्रह्म ध्यान में निहित हैं। भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में कहा हैं, ''ध्यान साधक, सन्यासियों से श्रेष्ठ है और वह वेदज्ञों से भी श्रेष्ठ है।'' यदि आप ब्रह्म ध्यान का नियमित अभ्यास करेंगे तो आपको थोड़ी नींद भी पूर्ण रूप से पर्याप्त होगी; क्योंकि ब्रह्म ध्यान क्रिया के समय आपको गहरी नींद से भी अधिक गहरे विश्राम की स्थिति प्राप्त होगी। थोड़े समय भी किया गया ब्रह्म ध्यान आपको एकदम तरोताजा करेगा और गहरी नींद प्रदान करेगा। यदि आप ब्रह्म ध्यान में नियमित रहोगे तो आपकी सारी भयन्वितियां, शंकायें और परेशानियां स्वयंमेव समाप्त हो जायेंगी।

**ब्रह्म योग द्वारा आत्म साक्षात्कार**

हम सभी अर्धचेतन रूप से जानते हैं, किन्तु शायद सचेतन रूप से नहीं कि आध्यात्मिक मार्ग पवित्रता तथा मोक्ष की ओर ले जाता है। सभी युगों में, महान् पैगम्बरों और महर्षियों ने घोषणा की है, ''अपने अंतरतम में देखो और उसे जानो'' ईसा मसीह कहते है, ''ईश्वर का राज्य तुम्हारे हृदय में हैं।'' सभी पूर्वी धर्म कहते हैं,''अपने आप को जानो''। कुछ यूनानी दार्शनिक घोषित करते हैं, ''यदि स्वयं को जान लोगे. तो तुम विश्व को जान लोगे।'' अतएव ब्रह्म योग द्वारा अपने मन को जाग्रत करो और उसे जानो, अपने मन में अनुभव करो। जब आप अपने अन्तरतम मन को जान लोगे, तब आप सच्ची शान्ति और आनन्द को अनुभूत करोगे, जो आपको सभी प्रकार की शान्ति और प्रसन्नता का अनुभव करायेगी। आत्म साक्षात्कार के लिये आपको ब्रह्म योग द्वारा अपने आप में गहरे पैठना होगा, जो आपको जीवन के सच्चे अर्थ और यथार्थज्ञान की ओर ले जायेगा।

**ब्रह्म योग साधन हेतु जीवन - पद्धति में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं**

यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जब आप ब्रह्म योग का अभ्यास करते हो, तो आपको अपने विद्यमान जीवन - क्रम को बहुत अधिक परिवर्तित नहीं करना है। तब भी आपके भोजन की आदतें वहीं रहेगी, आप अपने कार्य को करते रहोगे, अन्य लोगों से सामाजिक व्यवहार जारी रखोगे, फिर भी आपका जीवन परम आनन्द और संतुष्टि की चिरन्तन अवस्था से परिपूर्ण हो जायगा।

ब्रह्म योग का किसी भी विश्वास या दार्शनिक चितंन से किसी भी प्रकार का विरोध नहीं है। बल्कि ब्रह्म ध्यान का अभ्यास साधक को अपने विश्वास या दर्शन का अधिक सक्रिय अनुयायी बनाता है।

**ब्रह्म योग का फल**

ब्रह्म ध्यान, मन को शान्त तथा स्थिर बनाता है, आत्मबल की भावना को जाग्रत करता है और अन्तरचेतनात्मक ज्ञान के मार्ग खोलता है। आप ध्यान द्वारा आपके कार्यों की सही दिशा को जान जाओगे, क्योंकि अन्तरचेतनात्मक

वाणी आपको हमेशा मार्गदर्शन देती रहेगी। यदि आप प्रतिदिन चौबीस मिनिट तक ब्रह्म ध्यान करोगे तो आप जीवन संघर्ष का सामना शांति तथा आध्यात्मिक शक्ति के साथ करने में सक्षम हो जाओगे।

ब्रह्म ध्यान दैवीय गुणों जैसे धैर्य, अध्यवसाय, दया, प्रेम, दयालुता, क्षमा, सत्य, अहिंसा इत्यादि का विकास करता है, और इस प्रकार जीवन में शान्ति तथा प्रसन्नता का धीरे-धीरे प्रवेश कराता है और दैवीय बुद्धि तथा मुक्ति की ओर ले जाता है। ब्रह्म ध्यान, अधर्म द्वारा उत्पन्न अशुद्धता को नष्ट करता है और ब्रह्म ध्यान कर्त्ता को समाज का एक अप्रतिम सदस्य बनाता है।

**ब्रह्म ध्यान : सफलता – शांति तथा समृद्धि का दाता।**

ब्रह्म ध्यान, तंत्रिका संस्थान, मस्तिष्क तथा मन में व्यापक परिर्वतन लाता है। ब्रह्म ध्यान प्रक्रिया के समय नयी लहरें, नयी धाराएँ, नयी लीकें, नये कोष तैयार होते हैं, जो तनाव व दबाव के विपरीत प्रभावों को कम से कम करते हैं। इस प्रकार, शरीर, मन, हृदय, तंत्रिकाएं, संवेदनाएं, भावनाएँ और बोध को, जीवन-समस्या को सही ढंग से हल करने तथा उनका मुकाबला करने हेतु पुनर्गठित किया जाता है। ब्रह्म ध्यान के समय, ध्यानकर्त्ता गहरी नींद से अधिक मानसिक तथा भौतिक विश्राम की गहनतर अवस्था को प्राप्त करता है। ब्रह्म ध्यान के समय हृदय गति, श्वास गति और शरीर का तापमान भी घटता है। पिछले कई महीनों की चिंता के कारण संचित तथा उत्पन्न थकान, तनाव, दबाव और खिंचाव को योजनाबद्ध तरीके से ध्यान की गहरी विश्रामावस्था पूर्ण रूप से समाप्त कर देती है। अभ्यासकर्त्ता को ये तत्व जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करने में और अपने कार्य को अधिक दक्षता के साथ करने में सहायक होते हैं। इस प्रकार बुद्धि क्षमता में सुधार , अन्तर चेतना की योग्यता और अन्य योग्यताओं के कारण ब्रह्म ध्यान उत्तम कार्य संतुष्टि, अप्रतिम स्वास्थ्य, अधिक ऊर्जा, संवर्धित सृजनात्मकता और व्यापार में असामान्य सफलता की ओर ले जाता है।

**ब्रह्म ध्यान रोगों की चिकित्सा करता है**

ब्रह्म ध्यान एक अत्यन्त शक्तिशाली तंत्रिका तथा मानसिक टानिक है। ध्यान के समय उत्पन्न पवित्र लहरें शरीर के सभी कोषों में प्रवेश करती हैं और अनेक रोगों को दूर करती हैं। ध्यान की दैवीय लहरों का तंत्रिकाओं, कोषों तथा शरीर के अन्य अंगों और मन पर प्रसन्नकारी प्रभाव पड़ता है। शक्तिशाली पीड़ा हरने वाली लहरें मुक्त रूप से ईश्वर के पवित्र चरणों से पानी की तरह साधक के पूरे शरीर पर प्रवाहित होती हैं। इस तरह से ब्रह्म ध्यान कई प्रकार के रोगों तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा दिला सकता है।

**ब्रह्म योग और गुरु**

ब्रह्म योग के अभ्यास हेतु सिद्ध गुरु द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करना अत्यंत दुरुह है। अत: ब्रह्म मिथुन को परामर्श दिया जाता है कि वे इस पुस्तक का गंभीरता पूर्वक अध्ययन करें तथा शिव-शक्ति की कृपा प्राप्त करने का प्रयत्न करें, तत्पश्चात पुस्तक में दिये गये निर्देशों, विधाओं, मंत्रों आदि के प्रयोग द्वारा ब्रह्म योग का प्रारंभिक अभ्यास करें।

यदि ब्रह्म योग में पूर्ण सिद्ध प्राप्त करने की आपकी इच्छा है, तो आपको सूक्ष्म या शरीरधारी गुरु की खोज करना होगी। यह सत्य है कि, ''जब शिष्य सच्ची चाह करता है, तब उसे गुरु प्राप्त हो जाता है।'' योग साधक कुछ समय तक स्वतंत्ररूप से योग का अभ्यास करते हैं, बाद में जब उन्हें अवरोधों का सामना करना होता है, तब वे गुरु की खोज करते हैं और गुरु को पा लेते हैं। यदि आपको किसी व्यक्ति की उपस्थिति से शांति मिलती है और आपकी शंकाओं का समाधान हो जाता है, तो आपको उसे अपने गुरु के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिये।

निम्नलिखित श्लोक ब्रह्म गुरुदेवी और ब्रह्म गुरुदेव के विशिष्ठ लक्षणों को प्रस्तुत करते हैं: -

**वज्रं धारयति पद्मे, पद्मामृत धारयति पद्मे।**
**शिव-शक्ति ध्यानस्था, श्री गुरुदेवीं नमाम्यहम्॥**

**भावार्थ**

श्री गुरुदेवी को नमस्कार है, जो वज्र (लिंग) को पद्म (भग) में धारण कर चिर संभोग में रत होकर शिव-शक्ति के ध्यान में लीन हो जाती हैं।

**वज्रे प्रवेशयति पद्मे, वज्रामृत धारयति वज्रं।**
**शिव-शक्ति ध्यानस्थ, श्री गुरुदेवं नमाम्यहम्॥**

**भावार्थ**

श्री गुरुदेव को नमस्कार है, जो वज्र (लिंग) को पद्म (भग) में प्रवेश कर चिर संभोग में रत होकर शिव-शक्ति के ध्यान में लीन हो जाते हैं।

आदर्श ब्रह्म मिथुन का लक्ष ब्रह्म ध्यान की उपयुक्त स्थिति को सिद्ध करना होना चाहिये। यह स्थिति ब्रह्मानंद, सुख-शांति और सफलता की प्राप्ति का दिव्य सोपान है।

## प्राच्य गुह्य ब्रह्म योग – 2

# ब्रह्म योग के सिद्धान्त

### ब्रह्म योग का उद्‌गम और विकास
### ब्रह्म योग और शिव – शक्ति (शंकर – पार्वती)

काम (कामेश्वर) और तप (घोर - तपस्वी, अघोरेश्वर) दोनों दृष्टि से शंकर अतिवादी देव है। पार्वती आदर्श गृहणी, अनन्य साध्वी और महान योगिनी के रूप में मध्यम मार्ग और ब्रह्म केलि (विवाहित संभोग) साधन का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। तथापि, शंकर - पार्वती आदर्श ब्रह्म - मिथुन का अनुपम उदाहरण है, और पारिवारिक समन्वय, सामंजस्य, और निर्भरता का दिव्य प्रतीक हैं, जो शंकर - पार्वती के दैवी एकव्यरूप निम्नलिखित प्रतिरूपों से स्पष्ट प्रकट होता है :-

(1) शिव - शक्ति यंत्र

(2) शिव - लिंग और शक्ति योनि की मूर्तियाँ

(3) शंकर - पार्वती की प्रतिमायें

(4) अर्धनारीश्वर की प्रतिमायें

उपर्युक्त विवरण के अनुसार शंकर - पार्वती आदि ब्रह्म मिथुन के प्रतिरूप हैं और ब्रह्म योग के प्रवर्तक हैं।

रूद्रयामल और ब्रह्मयामल तंत्र में कुल योग (तंत्र योग) से सम्बंधित एक प्रसिद्ध कथा कुछ रूपांतर से प्रस्तुत की गयी है। इस प्रसिद्ध कथा के अनुरूप ही ब्रह्म योग के उद्‌भव का वृतांत निम्नलिखित है : -

एक समय ब्रह्माजी के पुत्र और श्रीराम के गुरू महर्षि वशिष्ठ ने सिद्धि और शिव - शक्ति के ब्रह्म एकत्व के साक्षात्कार हेतु बियाबान वन में बहुत समय तक घोर तपस्या की, परन्तु उन्हें शिव - शक्ति के दर्शन नहीं हुये। कुंठित और निराश वशिष्ठजी ब्रह्माजी के पास पहुँचे और क्रोध वश वे शिव - शक्ति को श्राप देने हेतु उद्यत हो गये। तब ब्रह्माजी ने उन्हें शांत किया और समझाया। ब्रह्माजी बोले, ''हे पुत्र, योगी जनों को इस प्रकार का व्यवहार शोभा नहीं देता है, तुम्हें कामाख्या (कामरूप) जाकर श्रद्धा और भक्ति पूर्वक शिव शक्ति की आराधना करनी चाहिये, वे तुम्हें अवश्य उचित मार्ग दर्शन करेंगे।'' तत्पश्चात वशिष्ठ जी देवी के प्रसिद्ध पीठ कामाख्या पहुँचे, और उन्होंने वहां पर श्रद्धा और भक्ति पूर्वक साधना प्रारम्भ कर दी, अंत में उन्हें दयामयी भगवती पार्वती ने दर्शन दिये। भगवती पार्वती जो योगियों की बाधाओं को दूर करने वाली हैं, वशिष्ठजी से बोली, ''हे वशिष्ठ तुम अभी भी सच्चे और सुलभ पथ से दूर हो, हमारे एकत्व के साक्षात्कार हेतु तुम्हें ब्रह्म योग की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। हमारी

सच्ची आराधना शारीरिक कष्ट और आडम्बर रहित है। हमारे ब्रह्म एकत्व का दर्शन कर्मकाण्ड, घोर तपस्या और शारीरिक कष्ट द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता है। हमारे ब्रह्म एकत्व का साक्षात्कार दिव्य है और वह देवताओं को भी दुर्लभ है। तुम कैलाश पर्वत पर जाकर हमारा ध्यान करो और अथर्ववेद का अनुशीलन करो, वहां पर तुम्हें, ब्रह्म योग का ज्ञान प्राप्त होगा। कैलाश पर्वत पर तुम्हें हमारे ब्रह्म एकत्व के विभिन्न रूपों, भेषों, ध्यान आसनों, तांत्रिक मुद्राओं, साधना विधियों, ब्रह्म मंत्रों आदि का ज्ञान प्राप्त होगा और तुम ब्रह्म योग में पारंगत होकर एक महान सिद्ध हो जाओगे। यद्यपि ब्रह्म योग सनातन है, परन्तु इसका साधन वही ब्रह्म मिथुन करते हैं, जिन पर हमारी कृपा होती है।'' भगवती पार्वती के यह वचन सुनकर वशिष्ठ कैलाश पर्वत पर पहुँचे। वहां पर पहुँच कर उन्होंने भूमि को प्रणाम करके कहा ''मैं ब्रह्मा पुत्र वशिष्ठ, शिव-शक्ति को साष्टांग प्रणाम करता हूँ, कृपया मुझे आपकी शरण में लीजिये। मैं मति भ्रमित हूँ, मुझ पर कृपा कीजिये। मैं यहां पर आपकी कृपा से आपके ब्रह्म एकत्व का साक्षात्कार करने आया हूँ, कृपया आप मुझे इस कार्य हेतु सिद्धि प्रदान कर अनुगृहीत कीजिये। मैं अत्यंत व्याकुल हूँ तथा मेरा मस्तिष्क क्षोभ और संदेह से ग्रस्त है। मुझे ब्रह्म योग का ज्ञान नहीं है। कृपया आपके असीम अनुग्रह द्वारा मेरे संदेह को दूर कर मेरा मार्ग दर्शन कीजिये तथा मेरी सुषुप्त शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को जाग्रत कर आपके एकत्व का साक्षात्कार कराइये।''

जैसे ही वशिष्ठ जी ने अपनी प्रार्थना पूर्ण की, वैसे ही भगवती पार्वती ने भगवान शंकर से निवेदन किया कि वे वशिष्ठ जी को ब्रह्म योग के मंत्र, यंत्र, विधाओं और क्रियाओं के साथ-साथ ब्रह्म योग से सम्बन्धित महाविद्याओं की आराधना का भी ज्ञान व उपदेश देकर अनुग्रहीत करें। भगवती पार्वती के निवेदन पर भगवान शंकर वशिष्ठजी को ब्रह्म योग का ज्ञान देने के लिये तत्पर हुए और उन्होंने वशिष्ठजी को आदेश दिया कि वे शीघ्र-अति शीघ्र सविकल्प समाधि की स्थिति में लीन हो जावें। तत्पश्चात् शंकर-पार्वती अन्तर्ध्यान हो गये।

## वशिष्ठजी की सविकल्प समाधि की झांकी

समाधि, ध्यान की वह अवस्था है, जिसमें केवल ध्यान की विष्य वस्तु की चेतना रहती है और मन की सहचेतना नहीं रहती है। सविकल्प समाधि में ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय की चेतना बनी रहती है। साधक सचेत रहता है और जानता है कि मैं ध्यान अवस्था में हूँ और ध्यान की विषय वस्तु चरम सत्य (ब्रह्म) है। निर्विकल्प समाधि में ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय की त्रयी चेतना का लोप हो जाता है और आत्म चेतना, सर्वव्यापी चेतना में विलीन हो जाती है।

वशिष्ठजी की सविकल्प समाधि की झाँकी का संक्षिप्त विवरण अधोलिखित

है :-

(1) एक ब्रह्म मिथुन (पति - पत्नी) रंगमंच पर प्रकट होता है।

(2) शैवेशी (पत्नी) अपने शाक्तेश (पति) में प्रेमानन्द शिव का आवाहन कर उन्हें निम्नलिखित रूप में रूपांतरित कर देती है :-

**नीलांगं, प्रफुल्ल वंदनं, विशालभालं, सुलोचनं।**
**दीर्घवक्षं, दीर्घबाहुं, सुप्रचण्डं, प्रगल्भनं॥**

इसी प्रकार शाक्तेश (पति) अपनी शैवेशी (पत्नी) में परमानन्द शक्ति का आवाहन कर उन्हें निम्नलिखित रूप मे रूपांतरित कर देते हैं ;-

**पूर्णेन्दुनिभां, गौरीं, तुंगकुचां, पंकजाक्षी।**
**कोमलांगीं, मंदस्मितां, क्षीणकटिं, नितम्बनीं॥**

(3) अब रंगमंच पर प्रेमानन्द शिव (शाक्तेश) और परमानन्द शक्ति (शैवेशी) आवाहन प्रलोभन मंत्रों का जप करते हुए ब्रह्म केलि में लीन होकर संगम और भन आदि मंत्रों का जप करते हुए ब्रह्म ध्यान करते हैं। तत्पश्चात् वे ब्रह्म ध्यान में शिव - शक्ति और महाविद्याओं (अथवा अपने इष्ट देवों) के विविध मंत्रों और स्तोत्रों आदि का मानसिक जाप और पारायण करते हैं।

4. कुछ समय पश्चात् वशिष्ठजी ब्रह्मानन्द शिव (शंकर) और ब्रह्मानन्द शक्ति (पार्वती) के ब्रह्म एकत्व (ब्रह्म केलि) का दर्शन करते हैं और उनके चारों ओर काम तंत्र में वर्णित ब्रह्म केलि के नाना आसनों में लीन अनंत ब्रह्म मिथुनों के दर्शन कर भावविभोर हो जाते हैं।

ब्रह्म योग के कर्मकाण्ड रहित तांत्रिक अनुष्ठान ब्रह्मकेलि की काम कलायें, ब्रह्म ध्यान की विधायें आदि, जो वैदिक मार्ग में दुर्बोध, दुर्ज्ञेय और अज्ञात हैं, का अवलोकन कर वशिष्ठजी ने किंकर्तव्यविमूढ़ हो दोनों हाथ जोड़ कर शिव - शक्ति को साष्टांग प्रणाम किया और नम्रता पूर्वक बोले ''हे शिव - शक्ति वैदिक कर्मकाण्ड में रत मेरा मन अति भ्रामित है और वेद से दुरूह और पृच्छन्न को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। ब्रह्म केलि से आत्मा और मन कैसे पवित्र हो सकते हैं? बिना वैदिक कर्मकाण्ड के आत्म साक्षात्कार कैसे हो सकता है? इत्यादि। मेरे संदेहों का कृपया निवारण कीजिये तथा ब्रह्म योग के अनुसरण में मेरी सहायता कर मुझे कृतार्थ कीजिये।'' वशिष्ठजी कि इस प्रार्थना के बाद उन्हें एक दिव्य आकाश वाणी सुनायी दी, ''हे महर्षि वशिष्ठ, आप महान ज्ञानी है, अतः आपको हठधर्म और दुराग्रह शोभा नहीं देता, ब्रह्म योग की उपयोगिता पर सहिष्णुता पूर्ण चिंतन और मनन करों, उसके पश्चात ब्रह्म सत्य को स्वीकार करो। ब्रह्म योग वेद से परे है, अतः अवेद है। यह योग विवाहित युगलों के लिये सर्वोतम साधन है। इस योग के ज्ञान मात्र से ब्रह्म मिथुन अपने को शिव - शक्ति के

सम्बद्ध मानने लगते हैं, और इस योग के साधन द्वारा वे स्वत: शिव-शक्ति रूप हो जाते हैं। अपने गृहस्थ जीवन में शाक्तेश (पति) और शैवेशी (पत्नी) एक दूसरे को गौरी-शंकर (अथवा सीता-राम) के रूप में देखने लगते हैं। जिन ब्रह्म मिथुनों के दर्शन आपने आपकी समाधि अवस्था में किये हैं, उनको हमारी कृपा से ही मंत्र, तंत्र और काम कला में प्रवीणता प्राप्त हुयी है। ब्रह्म योग का लक्ष्य केवल संभोग का परम आनन्द नहीं है, बल्कि वह 'ब्रह्म एकत्व हैं, जिसकी अनुभूति दम्पति को संभोग के द्वारा प्राप्त होती है। इस 'ब्रह्म एकत्व' की अवस्था में दम्पति के अहं और स्वार्थ के मूल में 'मैं' और 'तुम' परम अनुराग रूपी 'हम' में विलीन हो जाते हैं। **ब्रह्म योग संभोग से समाधि का पवित्र तंत्र है।**

## ब्रह्म मिथुन की उपलब्धियाँ

ब्रह्म मिथुन को दिव्य सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। वे सार्वभौमिकता, शाश्वत जीवन की चेतना, पूर्ण बोध के अंतर्ज्ञान और अखिल विश्व के क्रियाकलाप के रहस्य को समझने लगते हैं। उनका चित्त स्थिर और शांत रहने लगता है और वे स्थितप्रज्ञ बन जाते हैं। उनके समस्त भ्रम और संकट उनकी द्वेत भावना तथा अलगाव और भिन्नता की प्रवृत्ति का नाश हो जाता है। वे अपने ब्रह्म नेत्र (तृतीय नेत्र) की शक्ति का अनुभव करने लगते हैं। वे सदैव परमानंद की अनुभूति से पूर्ण रहते हैं। वे अनंतता, शाश्वतता और अमरत्व से एकत्व प्राप्त कर लेते हैं। उनके मुख मण्डल दैवी प्रकाश से आलोकित होते हैं और नेत्र कांतिवान हो जाते हैं। वे सयंमी और संतुष्ट हो जाते हैं। उन्हें थकावट का अनुभव नहीं होता है। वे निष्काम कर्म योगी बन कर अपना प्रत्येक कार्य लगन और ईमानदारी से करते हैं।

## ब्रह्म योग, भक्ति योग, कर्म योग और ज्ञान योग

ब्रह्म मिथुन भक्ति योग के साथ कर्म योग और ज्ञान योग का साधन भी अपने आप सहज रूप से करते रहते हैं। वह श्रद्धा और भक्ति के साथ अपने समस्त कर्म भगवान को अर्पण कर अहं, भय, अज्ञान, राग-द्वेष आदि से मुक्त होकर सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति कर स्थिर प्रज्ञ हो जाते हैं।

## ब्रह्म योग और मंत्र योग

ब्रह्म योग की साधना में ब्रह्म मंत्रों के अतिरिक्त तांत्रिक मंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है। ब्रह्म मंत्र, ब्रह्मांड, ब्रह्मात्मा, शाक्तेश और शैवेशी की शक्ति से परिपूर्ण हैं। इन मंत्रों की ध्वनि तरंगों का ब्रह्म मिथुन के मन और अंतरचेतना पर दिव्य प्रभाव होता है। ये मंत्र सूक्ष्म और क्षोभन (दिव्य काम उद्दीपन) शक्तियों के पुँज हैं। ब्रह्म मिथुन तथा ब्रह्माण्ड एक ही ब्रह्मात्मा के रूप है, अत: 'ब्रह्म

मिथुन ब्रह्म मंत्रों द्वारा समस्त शारीरिक एवं ब्रह्म शक्तियों को वश में कर लेते हैं। अनेक प्रकार के मंत्रों (आवाहन, प्रलोभन, संगम, क्षोभन आदि) द्वारा ब्रह्म मिथुन दिव्य शक्तियों का प्रस्फुटन कर अपने आसपास के वायुमण्डल को इन शक्तियों की उर्जा से चैतन्य कर, दिव्य आभा मण्डल का निर्माण करते हैं, और उनके केन्द्र में ब्रह्म मिथुन इन शक्तियों के नियामक के रूप में विद्यमान हो जाते हैं। अवचेतन मन पर इन मंत्रों का इतना सशक्त प्रभाव होता है कि ब्रह्म मिथुन ब्रह्मानंद में लीन होकर संभोग से समाधि को प्राप्त कर लेते हैं।

## ब्रह्म योग और यंत्र योग

ब्रह्म यंत्र, ब्रह्म मिथुन की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति को केन्द्रित कर, उनके सब आध्यात्मिक प्रयासों को एक ऐसे दैवी रूप में परिणित कर देते हैं, जो पूर्ण रूपेण पारलौकिक होता है। ब्रह्म यंत्र, ब्रह्म मिथुन हेतु उनकी सुप्त क्षमता जाग्रत करने, दैवी शक्ति प्राप्त करने, चेतना प्रभावित करने तथा ब्रह्म साक्षात्कार करने के अनुपम साधन हैं। ब्रह्म मिथुन को ब्रह्म केलि के समय शिव-शक्ति का ध्यान करना चाहिये। जब वे ब्रह्म केलि में रत न हों, तब शाक्तेश और शैवेशी को क्रमशः शक्ति और शिव यंत्रों का ध्यान करना चाहिये तथापि यदि वे चाहें तो इन तीनों यंत्रों में से किसी भी यंत्र का ध्यान अपनी रूचि के अनुसार कभी भी कर सकते हैं।

## ब्रह्म योग और हठ योग

ब्रह्म मिथुन को ब्रह्म योग द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार हेतु शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक सभी विधाओं का प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि वे सभी एक दूसरे से सम्बद्ध हैं।

हठ योग की कुछ सरल क्रियाओं द्वारा शारीरिक शक्ति का विकास और नियंत्रण करना चाहिये, जिससे ब्रह्म योग हेतु उत्तम काम शक्ति और उर्जा की प्राप्ति के साथ साथ स्नायविक नियंत्रण की शक्ति भी प्राप्त होती है।

हठ योग का अभ्यास मंत्र जाप और यंत्र ध्यान के साथ साथ करना चाहिये।

ब्रह्म मिथुन, ब्रह्म योग का अभ्यास, हठ योग के अभ्यास के बिना भी कर सकते हैं। हठ योग का अभ्यास, केवल ब्रह्म योग के अभ्यास में सहायक होता है, पर आवश्यक नहीं है।

## ब्रह्म योग, सूक्ष्म शरीर और कुण्डलिनी

तंत्र योग के समान ही ब्रह्म योग में भी सूक्ष्म शरीर और कुण्डलिनी जागरण का विशेष महत्व है।

ब्रह्म योग का दर्शन कुण्डलिनी जागरण को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। इस योग में कुण्डलिनी जागरण हेतु ब्रह्म और तांत्रिक मंत्रों के जाप, ब्रह्म यंत्रों के ध्यान, स्तोत्रों के पाठ, ब्रह्म केलि, ब्रह्म ध्यान आदि का प्रयोग किया जाता है।

ब्रह्म केलि में लीन ब्रह्म मिथुन जब मूलाधार चक्र पर शक्ति यंत्र का ध्यान करते हैं, तो उनकी कुण्डलिनी स्वत: जाग्रत होने लगती है, तथा उन्हें कुण्डलिनी जागरण का बोध और उसके जागरण की विधि का ज्ञान सहज ही प्राप्त हो जाता है। यह ध्यान उन्हें इच्छाशक्ति और स्नायविक नियंत्रण भी प्रदान करता है, जो दीर्घ ब्रह्म केलि हेतु अति आवश्यक है।

एक सांसारिक व्यक्ति सदैव इन्द्रिय सुख एवं सांसारिक आनंद का ही चिंतन करता है, अत: उसका मन मूलाधार चक्र में ही भटकता रहता है तथा उसकी कुण्डलिनी सुप्त रहती है। जब कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है तो इस संसार के लिये वह सुप्तावस्था प्राप्त कर लेता है अर्थात् उसके लिये संसार का अस्तित्व क्षीण हो जाता है। तथा वह आत्म साक्षात्कार हेतु प्रयत्नशील हो जाता है।

## शिव – पार्वती संवाद

एक समय रमणीक कैलाश शिखर पर भगवती पार्वती ने भक्ति-साधन प्रकाशित करने में कुशल भगवान शिव को भक्ति पूर्वक प्रणाम करके ब्रह्म-योग पर निम्नलिखित प्रश्न किये:-

(१) **पार्वती उवाच:** हे देवाधिदेव! हे परात्पर जगद्गुरू! हे सदा कल्याण स्वरूप महदेव! हे स्वामी! पति-पत्नी किस योग के अवलम्बन से ब्रह्ममय होकर दिव्यानन्द, सुख-शांति तथा भुक्ति-मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

**शिव उवाच:** हे देवि, तुम मेरी आत्मा हो। यह संसार पर उपकार करने वाला प्रश्न है, जो पहिले किसी ने मुझ से नहीं पूछा था। पति-पत्नी के लिये ब्रह्म-योग से उत्तम अन्य कोई योग त्रिलोक में नहीं है। हे सुंदरी, यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

(२) **पार्वती उवाच:** हमारे द्वारा पूर्व में ऋषि वशिष्ठ को प्रकाशित ब्रह्म केलि की न्यूनतम, मध्यम तथा अधिकतम अवधि एक सामान्य ब्रह्म-मिथुन के लिये क्या होनी चाहिये?

**शिव उवाच:** (१) न्यूनतम अवधि-१ घड़ी (२४ मिनट)
(२) मध्यम अवधि-२ से ३ घड़ी (४८ से ७२ मिनिट)
(३) अधिकतम अवधि-१ याम (३ घण्टे)

(३) **पार्वती उवाच:** एक सामान्य ब्रह्म-मिथुन किस प्रकार ब्रह्म-केलि में सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

**शिव उवाच:** ब्रह्म-केलि में सिद्धि निम्नलिखित विधाओं के उपयुक्त

सामंजस्य से प्राप्त होती है :-

(१) मंत्र (ध्यान, अर्चना आदि)

(२) तंत्र (काम - तंत्र में वर्णित दिव्य काम - कलाओं का प्रयोग)

(३) युक्ताहार (संतुलित भोजन)

**(४) पार्वती उवाच :** कृपया सामान्य ब्रह्म - केलि से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों और सिद्धियों का वर्णन कीजिये।

**शिव उवाच :**

(१) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित (वीर्यपात रहित) ३ बार ब्रह्म केलि में लीन होता है, तो वह अपने शरीर में नवीन शक्ति और स्फूर्ति का अनुभव करते हुये उत्तम स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

(२) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित ६ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसकी कटि (कमर, कूल्हा) लचीली और शक्तिशाली हो जाती है।

(३) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित ९ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसके नितंब व उरू(जाँघ) उर्जावान हो जाते हैं।

(४) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित १२ बार ब्रह्म केलि में लीन होता है, तो उसकी त्वचा कांतिवान हो जाती है।

(५) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित १५ बार ब्रह्म केलि में लीन होता है तो उसकी श्रवण - शक्ति और नेत्र - ज्योति अधिक उर्जा - युक्त हो जाती हैं।

(६) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित १८ बार ब्रह्म केलि में लीन होता है, तो उसका हृदय और रक्त - संचार नियंत्रित हो जाता है।

(७) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित २१ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसके शारीरिक रोगों का शमन होता है।

(८) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित २४ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसे आत्म - शांति की प्राप्ति होती है।

(९) यदि कोई पुरूष शुक्रस्तंभन सहित २७ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसे दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है।

(१०) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित ३० बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो वह मृत्यु को जीत लेता है अर्थात् उसकी आयु का स्तभंन हो जाता है।

(११) यदि कोई पुरूष शुक्र - स्तंभन सहित ३३ बार ब्रह्म - केलि में लीन होता है, तो उसे कुण्डलिनी और उसे जाग्रत करने की विधि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। और उसे अपने स्नायु निकाय, श्वास, मन, वीर्य तथा शरीर की अन्य क्रियाओं पर नियन्त्रण प्राप्त हो जाता है। वह त्रिकाल दर्शी होकर, परम आनन्द का अनुभव करता है। उसे दर्दुरी सिद्धि अर्थात् पृथ्वी से ऊपर उठने

की सामर्थ्य प्राप्त होती है। पृथ्वी तत्व पर उसका पूर्ण अधिकार हो जाता है, तथा तत्संबंधी कोई भय उसे नहीं रह जाता है।

(१२) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ३६ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो उसे कई रहस्यमय शक्तियाँ तथा सहज ज्ञान प्राप्त होते हैं। उसे सब देवी-देवताओं तथा नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जल तत्व पर उसे पूर्ण विजय प्राप्त होती है, तथा किसी भी प्रकार का जल भय उसे नहीं होता है।

(१३) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ३९ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो वह सब रोगों से मुक्त हो जाता है। उसे गड़े हुए धन, पृथ्वी तथा जल तत्वों का पूर्ण ज्ञान होता है। किसी भी प्रकार की अग्नि से उसे कोई भय नहीं रहता।

(१४) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ४२ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो उसे विश्व प्रेम तथा अन्य दैवी गुण प्राप्त होते हैं। उसे खेचरी सिद्धि (अर्थात वायु में विचरण की शक्ति) तथा पर काया प्रवेश सिद्धि (अर्थात् अन्य व्यक्ति की काया में प्रवेश करने की शक्ति) प्राप्त होती है। तथा समस्त वायु तत्वों पर उसका अधिकार हो जाता है।

(१५) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ४५ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो उसे चारों वेद तथा अन्य शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। वह त्रिकालदर्शी अर्थात् भूत, भविष्य तथा वर्तमान का ज्ञाता हो जाता है। वह समस्त आकाशीय तत्वों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

(१६) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ४८ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो उसके समस्त पूर्वजन्मों के पाप कर्मों का नाश हो जाता है। वह जीवित अवस्था से ही मुक्त हो जाता है और उसे सभी आठ मुख्य तथा बत्तीस उप सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

(१७) यदि कोई पुरुष शुक्र-स्तंभन सहित ५१ बार ब्रह्म-केलि में लीन हो जाता है, तो वह परम चैतन्य अवस्था को प्राप्त कर असीम आनन्द का अनुभव करता है। तथा परम ज्ञान की प्राप्ति कर आवागमन के चक्र अर्थात् जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाता है। वह संभोग में समाधिस्थ होकर द्वैत भाव को तिरोहित करता है और ऐक्य में लीन हो जाता है।

**(५) पार्वती उवाच:** हे स्वामी! कृपया मुझे ब्रह्म केलि में पति को पूर्ण सहयोग देने वाली पत्नी (शैवेशी) की उपलब्धियों के विषय में कुछ ज्ञान दीजिये।

**शिव उवाच:** हे देवी! ब्रह्म-केलि में पूर्ण सहयोग देने वाली शैवेशी को शाक्तेश को प्राप्त होने वाली उपर्युक्त समस्त उपलब्धियाँ तथा सिद्धियाँ स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। ब्रह्म-योग में स्त्री और पुरुष को एक रूप माना जाता है, अतः

उनकी उपलब्धियाँ और सिद्धियाँ भी समान होती हैं।

**(६) पार्वती उवाच:** एक सामान्य शैवेशी को ब्रह्म-योग में उसकी प्रगति का ज्ञान कैसे होता है।

**शिव उवाच:** यदि वह क्रमशः कामेच्छा या वासना, लोभ, क्रोध, रुचि-अरुचि पर नियंत्रण पाती जाती है, यदि वह प्रसन्नता तथा आनन्द का अनुभव करती है, यदि वह अपने आप को मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ पाती है, यदि वह पूर्ण शान्ति से परिपूर्ण होती है, यदि वह स्थिर रहती है, और ध्यान में आनन्द का अनुभव करती है, तो निश्चित ही वह शैवेशी बिना किसी बाधा के ब्रह्म-योग में उन्नति करती जा रही है।

वह शैवेशी जो नियमित ब्रह्म-योग साधन करती है, आकर्षक व चुम्बकीय व्यक्तित्व को प्राप्त होती है। उसके संपर्क व सान्निध्य में आने वाले उसकी वाणी से प्रेरणा पाते हैं, तथा मन की उच्चता की ओर बढ़ते हैं। और वे उस शैवेशी की मधुर वाणी, सौम्य व्यवहार, दिव्य गुणों, स्वस्थ शरीर, तेजस्वी मुख तथा निर्मल नेत्रों से प्रभावित होते हैं।

**(७) पार्वती उवाच:** हे नाथ! किसी महाशैवेशी का दृष्टांत दीजिये!

**शिव उवाच:** ऋषि वशिष्ठ की पत्नी परम-साध्वी, महा-विदुषी और ब्रह्मदेवी अरुन्धती महाशैवेशी का एक ज्वलंत उदाहरण है।

**(८) पार्वती उवाच:** आप देवि अरुन्धती को ब्रह्मदेवी और महाशैवेशी क्यों मानते हैं?

**शिव उवाच:** एक समय दारुक वन में वशिष्ठ आदि अनेक ऋषि सपत्नीक वैदिक कर्मकाण्ड के अनुष्ठान करने हेतु एकत्र हुये। मैं उन ऋषियों पर अनुग्रह करके उन्हें कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति से निवृत्ति का उपदेश देने और निवृत्ति के साधन ब्रह्म-योग का ज्ञान देने दिगम्बर रूप में वहां उपस्थित हुआ।

ऋषि उस समय पूजन की सामग्री पुष्प-फल आदि लेने गये थे। ऋषि पत्नियों ने जब मेरे नील लोहित अत्यंत सुन्दर अंगों, विशाल भाल, उन्मुक्त केश, अर्धोन्मीलित नेत्र, अजान बाहु, विशाल वक्ष, दिव्य कटि, पुष्ट नितंब व उरु आदि का दर्शन किया, तो वे मंत्र-मुग्ध हो गयीं। मेरे स्थित-प्रज्ञ और मनोहर रूप को देखकर अरुन्धती को छोड़ कर अन्य सभी ऋषि-पत्नियों के मन में कामदेव ने विकार उत्पन्न कर दिया और कामावेग से व्यग्र हो गयी। अरुन्धती ने उन्हें समझाकर रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु कामावेग में किसी का भी उपदेश अच्छा नहीं लगता है। काम के वेग से उन्मत होकर कामनियाँ जिस कार्य को आरंभ करती हैं, उसमें विघ्न-बाधा उत्पन्न करने की शक्ति पितामह ब्रह्मा में भी नहीं है। यद्यपि वे ऋषि-पत्नियाँ पतिव्रता और संयमी थी, किन्तु उस समय उनका विवेक और संयम तिरोहित हो गया था। वे कुछ समय तक अस्त व्यस्त अरुन्धती के पास खड़ी रहीं और फिर मेरी ओर चल पड़ी।

कामावेग से वे अर्धनग्न होकर नृत्य और गायन करने लगीं और मुझसे रति-दान की याचना करने लगी। किन्तु मैं आत्मलीन था अतः मैं स्थित-प्रज्ञ बना रहा। उसी समय ऋषिगण लौट आये। और जब उन्होंने अपनी अस्त-व्यस्त पत्नियों के मध्य मुझे देखा, तो वे अपना मानसिक संतुलन खो बैठे और बिना सोचे समझे क्रोध के वशीभूत होकर मुझे शाप दिया, ''हे निर्लज्ज, तूने इन महिलाओं के मध्य दिगम्बर रहकर, मर्यादा का उलंघन किया है, अतः तेरा उपस्थ (लिंग) तत्काल भूमि पर गिर जाय।''

उस शाप के कारण मेरा उपस्थ तुरंत भूमि पर गिर पड़ा और वह प्रज्जवलित हो गया। जब वह समस्त चराचर को भस्म करने लगा तो ऋषिगण भय से संतप्त होकर ब्रह्मा जी की शरण में गये और दयनीय वाणी में बोले, ''हे भगवन! कृपा कर नील लोहित की लिंगाग्नि से त्रिलोक को भस्म होने से बचाइये।'' तब भगवान ब्रह्मा चिंतित स्वर में बोले, ''वे नील लोहित स्वयं भगवान रुद्र थे, और आप पर अनुग्रह करके उपस्थित हुए थे। आप लोगों ने निर्दोष अवधूत को शाप देकर अक्षम्य अपराध किया है, अतः तुम्हारे समस्त पुण्यों का क्षय हो गया है।''

तब ऋषिगण अत्यंत करुणा युत स्वर में बोले, ''हमसे महान अपराध हुआ है। अब क्या करे?'' इस पर ब्रह्मा जी बोले, ''भगवान रुद्र के तेज को कौन सह सकता है? आप उनकी शरण में जायें।'' जब ऋषियों ने मेरी स्तुति की तो मैंने प्रकट होकर उनसे कहा, ''यदि स्वयं पार्वतीजी भगस्वरूप धारण करके मेरे लिंग को ग्रहण करें, तो वह शांत होकर, भग-लिंग धारण कर विश्व का कल्याण करेगा।'' तब ऋषियों ने आपका स्तवन व आराधन किया और संसार के कल्याण के लिये आपने योनिरूपा होकर उस लिंग को धारण किया। वही लिंग हाटकेश्वर के नाम से विख्यात हुआ तथा उसी समय से भग-लिंग आराधन का प्रादुर्भाव हुआ।

केवल ब्रह्मयोग साधन की शक्ति से ही अरुन्धती अपने पातिव्रत्य-धर्म के महान् आदर्श पर दृढ़ रहीं, अतः मैं उन्हें महाशैवेशी मानकर करबद्ध प्रणाम करता हूँ।

**(९) पार्वती उवाच:** हे आदि गुरु! आप हमारे द्वारा ब्रह्म योग में दीक्षित कुछ दिव्य ब्रह्म मिथुनों के नाम प्रकाशित कीजिये।

**शिव उवाच:** सरस्वती-गणेश, लोपामुद्रा - अगस्त, शतरूपा-मनु, कात्यायनी-याज्ञवल्क्य, सीता-राम, रुक्मिणी-कृष्ण तथा त्रिया राज्य की महारानी तिलोत्तमा-नाथ सम्प्रदाय के प्रथम गुरु मत्स्येंद्रनाथ।

## प्राच्य गुह्मा ब्रह्म योग : 3

# मूलभूत ब्रह्म मंत्र और उनका प्रयोग

इस अध्याय में हम उन मूलभूत ब्रह्म मंत्रों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जो किसी तांत्रिक अथवा अन्य गुह्य साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं। यद्यपि इनके उद्भव के अंकुरों का दर्शन चिद्-विलास, काम कला विलास, शक्ति संगम, वृहद् आरण्यक उपनिषद् आगम, वेदांत, योग आदि तांत्रिक और आध्यात्मिक ग्रंथों के गंभीर अध्ययन द्वारा किया जा सकता है।

चिद्-विलास के अनुसार ''स्वप्रकाश रूप (शिव) और उनके विमर्श रूप (शक्ति) के एकत्व (चिद्विलास) रूप का नाम पराशक्ति (ब्रह्मात्मा) है। इस पराशक्ति द्वारा ही इस अनेक नाम, रूप, और आकार वाले जगत की सृष्टि हुयी है। श्री विद्या आराधना का मुख्य लक्ष्य शिव, शक्ति और स्वयं (गुरु-मध्यस्थ-शाक्तेश/शैवेशी) के एकत्व का साक्षात्कार करना है। काम कला दो प्रतिच्छेदी त्रिभुजों (शिव-शक्ति) के संगम द्वारा व्यक्त की जाती है, जिसमें उर्ध्वमुखी त्रिभुज और अधोमुखी त्रिभुज क्रमशः शिव और शक्ति के प्रतीक होते हैं। जीवात्मा और ब्रह्मात्मा दोनों चेतना की निम्नलिखित चार अवस्थाओं में विद्यमान रहते हैं:-

(1) जाग्रत अवस्था
(2) स्वप्न अवस्था
(3) सुषुप्ति अवस्था (गहन निद्रा)
(4) तुरीय अवस्था (साक्षात्कार की अवस्था-समाधि अवस्था-जाग्रत, और स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था से परे, जिसमें परम सत्य का साक्षात्कार होता है)

इन अवस्थाओं से परे एक अवस्था और है, जिसे तुरीयातीत (तुरीय से परे) कहते हैं, इस अवस्था में जीवात्मा और ब्रह्मात्मा के एकत्व का साक्षात्कार होता है।

बृहद अरण्य उपनिषद् के अनुसार ''एकाकी शिव अकेले अपने प्रकाश का आनन्द नहीं ले सकते थे, अतः उन्होने स्वयं अपनी शक्ति को प्रकट किया, जिनका कार्य आकाश और समय (काल) में उनकी दिव्य महिमा और शक्ति का लीलामय परावर्तन (विर्मश) करना था। इन दो दैवी शक्तियों, पदार्थ एवं उर्जा के संगम से ही इस चराचर जगत की सृष्टि हुयी है। इस परिकल्पना को आदि युगल की लीला (विलास अथवा माया) कहा जा सकता है। इससे प्रकट होता है कि जगत शिव-शक्ति की लीला अथवा संगम द्वारा प्रकट हुआ है। सिद्ध ब्रह्म मिथुन अपने भीतर की ओर झाँक कर शिव-शक्ति की इस लीला अथवा संगम का दर्शन अपने आप कर सकते हैं।''

ब्रह्मात्मा को अपनी लीला और सृष्टि के सृजन हेतु सर्वप्रथम विषय (शिव) और वस्तु (शक्ति) के रूप में विभाजित होना पड़ा। वस्तु वह है, जिसका

अनुभव विषय करता है, और विषय वह है, जिसका अनुभव वस्तु को है। भारतीय दर्शन में विषय और वस्तु को क्रमशः अहं (मैं) और इदं (वह) की संज्ञा दी गयी है, जो शिव (पुरुष) और शक्ति (प्रकृति) अर्थात् नर-नारी के प्रतीक हैं। ब्रह्म योग में नर और नारी को शाक्तेश (पति) और शैवेशी (पत्नी) की संज्ञा दी गयी है। ब्रह्म योग का अंतिम लक्ष्य अहं (पति) और इदं (पत्नी) के एकत्व द्वारा ब्रह्म एकत्व का साक्षात्कार करना है। तथापि इस स्थिति का साक्षात्कार केवल इच्छा और बुद्धि द्वारा साकार नहीं हो सकता है। अतः ब्रह्म योग इस स्थिति के साक्षात्कार हेतु मार्ग दर्शन करता है।

इस अध्याय में दिये गये मंत्र आध्यात्म और अतींद्रिय दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली हैं, तथा पराभौतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत विलक्षण, अलौकिक और रहस्यमय हैं। कुछ क्षोभन मंत्र हैं, जिसमें दिव्य क्षोभना अर्थात कामोद्दीपन और काम-स्तंभन की शक्ति है। ब्रह्म योग के अभ्यास के प्रारंभ में शाक्तेश और शैवेशी को केवल कुछ मंत्रों को याद करने का परामर्श दिया जाता है। परन्तु जैसे-जैसे वे ब्रह्म योग में प्रगति करते जावें, वैसे वैसे उन्हें अधिक से अधिक मंत्र याद करने का प्रयत्न करना चाहिये। ब्रह्म योग के प्रारंभ में उन्हें अपनी रुचि के अनुसार मंत्रों का उपांशु अथवा मानसिक जप करना चाहिये, परन्तु सिद्धि की अवस्था में मानसिक जप ही श्रेयस्कर होता है। शाक्तेश और शैवेशी जब चाहें, तब इन मंत्रों का जप कर सकते है, अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि इन मंत्रों का जप केवल ब्रह्म केलि के अवसर पर ही किया जाय।

## आवाहन

आवाहन को ब्रह्म योग के अनुष्ठान का प्रथम संस्कार माना जाता है। आवाहन संस्कार में शाक्तेश और शैवेशी क्रमशः शिव और शक्ति का मंत्रों द्वारा आह्वान कर उनका स्वयं में प्रादुर्भाव कराते हैं। इस प्रकार शाक्तेश और शैवेशी का क्रमशः शिव और शक्ति से एकत्व हो जाता है, जो अद्वैत की प्रथम अवस्था है।

प्रणाम! शतशः प्रणाम! पुनः पुनः उन शिव-शक्ति (आदि ब्रह्म मिथुन) को प्रणाम! जो अपनी ब्रह्म केलि में लीन होकर, इस जगत की उत्पत्ति, पालन और लय करते हैं। जो पराशक्ति के अनंत अनुगृह के द्वारा ब्रह्मा मिथुन को सहजता से मार्गदर्शन करते हुये, उनकी सुप्त शारीरिक उर्जा और चेतना को जाग्रत करते हैं और उन्हें भावातीत शारीरिक सुख और परम मानसिक आनंद कीं अनुभूति प्रदान करते हैं, तथा अन्ततोगत्वा उन्हें, ब्रह्मात्मा के सायुज्य की प्रतीति की ओर ले जाते हैं। उनका अनुग्रह हम सब पर सदा बना रहे।

## शैवेशी (पत्नी) के पाठ हेतु मंत्र

## शक्ति आवाहन मंत्र

निम्नलिखित मंत्र के पाठ द्वारा शैवेशी स्वयं में शक्ति का आवाहन करती

हैं:-

1. ॐ ह्रीं शक्ति महादेवि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय।
मम् अंगे प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ह्रीं ॐ।

## शिव आवाहन मंत्र

निम्नलिखित मंत्र के पाठ द्वारा शैवेशी अपने शाक्तेश में शिव का आवाहन करती हैं:-

2. ॐ ह्रीं शिव महादेव आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय शाक्तेशां।
अंगे प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ह्रीं ॐ।

## ब्रह्मानंद शिव ध्यान

3. अनंतरूपं, विशालभालं, सुनेत्रं, मुक्तकेशं, मनोजवम्।
दीप्ताकारं, मृदु हास्यं, गम्भीरं, शक्ति-पुंज, महावीरम्॥

ब्रह्म ध्यान में शैवेशी, ब्रह्मानंद, शिव के निम्नलिखित दस रूपों में से किसी एक का, अथवा क्रमानुसार कुछ का अथवा क्रमानुसार सबका अपनी रुचि के अनुसार आवाहन कर सकती हैं। यह ध्यान देना आवश्यक है, कि ब्रह्मानंद शिव का प्रत्येक रूप उनके पूर्ण ब्रह्म-विभव का एक सीमित प्राकट्य है, किन्तु वह उनके पूर्ण रूप का अपरिहार्य रूप है। विभिन्नता की खोज के बिना, एकत्व का साक्षात्कार संभव नहीं होता है।

## दस शिव ध्यान

### 1. परमानंद शिव

4. शशिवर्णं, शुभतनुं, पद्माधरं, सुलोचनम्॥
सुप्रसन्नं, मृदुहास्यं, वीर्यवन्तं, कामप्रियम्॥

### 2. दिव्यानंद शिव

5. ताम्रवर्णं, सुदर्शनं, तेजयुक्तं, मनोजवम्।
सौम्यं, शुक्रस्तम्भीं, नारि-साधकं, नारि-मोहकम्॥

### 3. मदनानंद शिव

6. शांताकांर, मेघवर्णं, चितरंजनं, विलक्षणम्।
शक्तिवंतं, शुक्रवंतं, काम-केलि प्रकाशकम्॥

### 4. मुक्तानंद शिव

7. कर्पूराभं, चित्तचोरं, महावीरं, पद्मनेत्रं।
दीप्ताकारं, मृदु हास्यं, रतिप्रियं, कल्पद्रुमं॥

### 5. उन्मादानन्द शिव

8. रक्तवर्णं, ज्योतिर्मयं, स्मिताननम्, पिंगलाक्षं तथा।
मुक्तकेशं, महाभीमं, बलवन्तं, मदप्रद्रम्॥

## 6. अमृतानंद शिव

9. दिव्यं भव्यं, शुभ तनुं, मुक्त केशं, सुलोचनम्।
सकुण्डलं, ओजयुक्तं, कामरूपं नारि साधकम्॥

## 7. मुग्धानंद शिव

10. तेजस्विनं, चंद्रकांतं, गुणाढ्यं, बलशालिनम्॥
सुदर्शनं, चारुहासं, सर्वकामप्रदं, शुभम्॥

## 8. प्रेमानन्द शिव

11. नीलांगं, प्रफुल्ल वदनं, यतभालं, सुलोचनम्।
दीर्घवक्षं, दीर्घबाहुं, सुप्रचण्डं, प्रगल्भकम्॥

## 9. प्रगल्भानदं शिव

12. मेघवर्णं, शुक्रवंतं, विशालाक्षं, सुग्रीवं।
मुदितं प्रगल्भानन्दं, माननी मद मोचनम्॥

## 10. सम्मोहानंद शिव

13. बालरवि संनिभं, सौम्यं, शांतं, सुनयनम्।
प्रसन्न वदनं, गंभीरं, मदन रूपं, जगन्मोहनम्॥

## प्रलोभन मंत्र

14. अहं शैवेशी, त्वं शाक्तेश, ह्यावयीस्तु ब्रह्म-ध्यानार्थे संगम:।

**भावार्थ:** मै शैवेशी हूं, आप शाक्तेश है, आओ ब्रह्म-ध्यान हेतु हम संगम करें।

15. शाक्तेश मम नाभि तले, दिव्य मदन मंदिरम्।
तव कामदण्ड प्रवेशयति, ब्रह्म-योग सिद्धियाम्॥

**भावार्थ:** हे शाक्तेश, मेरी नाभि के नीचे दिव्य काम मंदिर है, ब्रह्म योग की सिद्धि हेतु आप उसमें आपका काम दण्ड प्रवेश कीजिये।

16. ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं पद्मे वज्र हूं फट्।

**भावार्थ:** हे शाक्तेश वज्र (लिंग) को पद्म (भग) में प्रवेश कीजिये।

17. ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं कुण्डे दण्ड हूं फट्।

**भावार्थ:** हे शाक्तेश कुण्ड (भग) में दण्ड (लिंग) का प्रवेश कीजिये।

18. ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं कुसमे कुलिश हूं फट्।

**भावार्थ :** हे शाक्तेश कुसुम (भग) में कुलिश (लिंग) का प्रवेश कीजिये।

19. **ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ताम्बूल-पत्रे वाण हूं फट्।**

**भावार्थ :** हे शाक्तेश, ताम्बूल-पत्र (भग) में वाण (लिंग) का प्रवेश कीजिये।

## महाशक्ति रुद्राणी आवाहन मंत्र

20. **ॐ नमो भगवती रुद्राणी महाशक्तिं ऐहि ऐहि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं मम इन्द्रियाणि वशमानय श्रीं ह्रीं क्ली शाक्तेशां आकर्षय आकर्षय सर्वजनान् मोहय मोहय शत्रुं मर्दय मर्दय मम सुख-शांतिं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा।**

**टिप्पणी :** यह मंत्र 1 का विस्तारित रूप है।

21. **शिव-शक्ति ध्यानस्था, ब्रह्म योगे रतो अहं।**
**शाक्तेश संस्थितो अहं, रुद्राणि अहं शक्ति अहं॥**

**भावार्थ :** शिव-शक्ति ध्यानस्था, मैं ब्रह्म योग में लीन, शाक्तेश रत हूँ। मैं रुद्राणी हूँ, मैं शक्ति हूँ।

## क्षोभन मंत्र

22. **ॐ नमो भगवती रुद्राणी महाशक्तिं शाक्तेशां परमानन्दं प्रदाय प्रदाय मदं द्रवाय द्रवाय स्वाहा ठः ठः।**

**भावार्थ :** हे महाशक्ति रुद्राणी, शाक्तेश के मद को द्रवित कर परमानंद प्रदान करो।

23. **ॐ नमो भगवती रुद्राणी महाशक्तिं शाक्तेशां आकर्षय आकर्षय प्रसन्नाय प्रसन्नाय मम सौभाग्य आरोग्य देहि देहि स्वाहा।**

**भावार्थ :** महाशक्ति रुद्राणी शाक्तेश को आकर्षित कर प्रसन्न करो तथा मुझे सौभाग्य-आरोग्य प्रदान करो।

## शाक्तेश (पति) के पाठ हेतु मंत्र

## शिव आवाहन मंत्र

निम्नलिखित मंत्र के पाठ द्वारा शाक्तेश स्वयं में शिव का आवहन करता है :-

1. **ॐ ह्रीं शिव महादेव आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय मम् अंगे प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ह्रीं ॐ।**

निम्नलिखित शक्ति आवाहन मंत्र के पाठ द्वारा शाक्तेश, अपनी शैवेशी में शक्ति

का आवाहन करता है :-

2. ॐ ह्रीं शक्ति महादेवि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय
शैवेशी अंगे प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर ह्रीं ॐ।

## ब्रह्मानंद शक्ति ध्यान

3. अनंतरूपां, महामायां, वरारोहां, सुनयनां, कांत - कपोलां।
रक्ताधरां, पीनंकुचां, क्षीणमध्यां, छुद्रनाभी, कुंभनितंबां॥

ब्रह्म ध्यान के समय शाक्तेश ब्रह्मानंद शक्ति के निम्नलिखित दस रूपों में से किसी एक रूप का अथवा क्रमानुसार कुछ रूपों का अथवा क्रमानुसार सभी रूपों का अपनी रुचि के अनुसार आवाहन कर सकता है। यह ध्यान देना आवश्यक है, कि ब्रह्मानंद शक्ति का प्रत्येक रूप उनकी ब्रह्म शक्ति का एक सीमित प्रतिरूप है, किन्तु वह उनके संपूर्ण रूप का अनिवार्य अंग है। अनेकता की खोज के बिना एकता को समझना दुष्कर होता है।

## दस शक्ति ध्यान

### 1. परमानन्द शक्ति

4. पूर्णेन्दु निभां, गौरीं, तुंग कुचां, पंकजाक्षीं।
कोमलांगीं, मंद स्मितां, क्षीण कटिं, नितंबनीं॥

### 2. दिव्यानंद शक्ति

5. पद्मनाभनां, ताम्रवर्णां, कुरंगनेत्रां, मनोहराम्।
दीर्घ कुंतलां, वरारोहां, दिव्यां, पीनकुचाम्॥

### 3. मदनानंद शक्ति

6. मृगाक्षीं, मुक्तकेशीं, पल्लवधरां, चंदन गंध लिप्ताम्।
स्मरमुखीं, तुंगकुचां, श्यामां, कामशास्त्र विशारदाम्॥

### 4. मुक्तानंद शक्ति

7. कंचनवर्णां, कृशांगीं, चलत् चंचल लोचनाम्।
सदा लोलगतिं, कांतां, नर्तकी - रूप धारणीम्॥

### 5. उन्मादानंद शक्ति

8. प्रचण्ड वदनां, कृष्णां, पीन - पयोधरां, प्रभावतीं।
कोमलांगीं, लोल - लोचनां, कामार्त्तां, कलावतीं॥

### 6. अमृतानंद शक्ति

9. प्रफुल्ल - पद्मवदनां, अरुण वर्णां, दिव्यहास्यां, सुलोचनीम्।
कुचभार नम्रां, क्षीण कटिं, सघन जघनां, नितंम्बनीम्॥

### 7. मुग्धानंद शक्ति

10. चंद्रकांत - छविं, नवोदित कुचां, बालां नानालंकार भूषिताम्।

मंजीर, हार, केयूर किंकिणि, रत्न कुण्डल मंडिताम्।।

### 8. प्रेमानंद शक्ति

11. नीलमणि – सम – कांतिं, स्मेरमुखीं, विशालाक्षीं, तुंग कुचां।
कोमलांगी, कृशोदरीं, मदन – मत्तां, सर्वकामप्रदां।।

### 9. प्रगल्भानंद शक्ति

12. पद्मराग – समप्रभां, भीमांगीं, पीनोत्तुंग पयोधराम्।
कोमलांगीं, स्मरमुखीं, प्रगल्भां, रतिप्रियाम्।।

### 10. सम्मोहानंद शक्ति

13. बाल – रवि निभां, दिव्याक्षीं, मुग्धां, मनोहराम्।
अरुण कपोलां, मृदु – हास्यां, बालां, जगतमोहनीम्।।

### प्रलोभन मंत्र

14. अहं शाक्तेश, त्वं शैवेशी, ह्यावयीरस्तु ब्रह्मध्यानार्थे संगमः।

**भावार्थ :** मैं शाक्तेश हूँ, आप शैवेशी हैं। आओ ब्रह्मध्यान हेतु संगम करें।

15. शैवेशी तव नाभि तले, दिव्य मदन मंदिरम्।
मम कामदण्ड प्रवेशांति, ब्रह्म – योग सिद्धाम्।।

**भावार्थ :** हे शैवेशी, तेरी नाभि के नीचे दिव्य काम मंदिर है, ब्रह्म योग की सिद्धि हेतु उसमें मेरा कामदण्ड धारण कीजिये।

16. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वज्र पद्मे हूं ठं ठः।

**भावार्थ :** हे शैवेशी, वज्र (लिंग) को पद्म (भग) में धारण कीजिये।

17. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दण्डे कुण्डे हूं ठं ठः।

**भावार्थ :** हे शैवेशी, दण्ड (लिंग) को कुण्ड में धारण कीजिये।

18. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कुलिश कुसुमे हूं ठं ठः।

**भावार्थ :** हे शैवेशी कुलिश (लिंग) को कुसुम (भग) में धारण कीजिये।

19. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वाण ताम्बूल – पत्रे हूं ठं ठः।

**भावार्थ :** हे शैवेशी वाण (लिंग) को ताम्बूल - पत्र (भग) में धारण कीजिये।

20. ॐ नमो भगवते रुद्राय महाशिवाय एहि एहि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं मम इन्द्रियानि वशमानय श्रीं ह्रीं क्लीं शैवेशीं आकर्षय आकर्षय सर्वजनाम् मोहय मोहय शत्रुं मर्दय मर्दय मम सुख शांतिं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् स्वाहा।

**टिप्पणी :** यह मंत्र 1 का विस्तारित रूप है।

21. शिव – शक्ति ध्यानस्थ, ब्रह्म – योगे रतो अहं।
शैवेशी संस्थितो अहं, रुद्रो अहं, शिवो अहं॥

**भावार्थ :** शिव - शक्ति, ध्यानस्थ, मैं ब्रह्म योग लीन, शैवेशी रत हूँ, मैं रुद्र हूँ, मैं शिव हूँ।

22. ॐ नमो भगवते रुद्राय महाशिवाय शैवेशीं परमानन्दम्
प्रदाय प्रदाय, मदं द्रवाय स्वाहा ठः ठः।

**भावार्थ :** महाशिव रुद्र, शैवेशी को परमानंद प्रदान कर, उनके मद को चूर्ण करो।

23. ॐ नमो भगवते रुद्राय महाशिवाय शैवेशीं आकर्षय
आकर्षय, प्रसन्नाय, प्रसन्नाय मम
सौभाग्य – आरोग्यं देहि देहि स्वाहा।

**भावार्थ :** महाशिव रुद्र, शैवेशी को आकर्षित कर प्रसन्न करो तथा मुझे सौभाग्य - आरोग्य प्रदान करो।

## शांति मंत्र

शांतिं कुरु सर्व सिद्धि सुख – शांति प्रदायकं।
भुक्ति मुक्ति दायकं, नमस्ते नमस्ते स्वाहा॥
॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥


### लेखक के आध्यात्मिक, पठनीय प्रकाशन

| | |
|---|---|
| 1. On Meditation - | Rs. 135/- |
| 2. Cosmic Yoga (Brahma Yoga) - | Rs. 135/- |
| 3. Kama Tantra (Divine Techniques of Love) - | Rs. 160/- |
| 4. काम – तंत्र (शिव - शक्ति तंत्र पर आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ग्रंथ) - | Rs. 160/- |
| 5. ध्यान साधना और आधुनिक मानव - | Rs. 115/- |
| 6. ब्रह्म योग (विवाहित युगलों हेतु सुख - शांति और सफलता का मार्ग) - | Rs. 160/- |
| 7. ध्यान योग - | 10 / रु. |
| 8. योग और ध्यान - | 10 / रु. |
| 9. योग साधना - | 10 / रु. |
| 10. प्राच्य गुह्य ब्रह्म योग - | 10 / रु. |
| 11 दस महाविद्या तंत्र - | 51 / रु. |
| 12. प्राचीन भारत के लुप्त श्री दस महाविद्या शक्तिपीठों का पुनर्निमाण - | 5 / रु. |

## कमला स्तोत्र

1. कंचनाभां वराभयं पद्मयुग्मं मुकुटोज्वलां।
स्मेरमुखीं विष्णुशक्तिं कमलेदेवि नमोऽस्तुते॥

2. पट्टाम्बर परिधानां नानालंकार भूषितां।
नलिनस्थितां नलिनाक्षीं कमले देवि नमोऽस्तुते॥

3. परमानंदमयी देवि परब्रह्म परमात्मा।
परमशक्ति परमभक्ति कमलेदेवि नमोऽस्तुते॥

4. विश्वकर्ती विश्वभर्ती विश्वहर्ती विश्वप्रीता।
विश्वार्चिता, विश्वातीता कमले देवि नमोऽस्तुते॥

5. भुक्तिमुक्ति कारणीं भक्तकष्टनिवारिणीं।
भवसागर तारिणीं कमले देवि नमोऽस्तुते॥

6. धर्मार्थकाम प्रदायिनी महामोह विनाशिनी।
मोक्षदायिनी सिद्धदायनी कमले देवि नमोऽस्तुते॥

7. हरिप्रिया महामाया शिवाराध्या ब्रह्मपूजिता।
जयदा – यशदा – शुभदा कमले देवि नमोऽस्तुते॥

8. ब्रह्मयोगाप्रिया ब्रह्मशैवेशी ब्रह्ममार्ग प्रदर्शिनी।
नितम्बिनी श्रीफलवक्षा कमले देवि नमोऽस्तुते॥

9. नवयौवन सम्पन्ना कांत कपोला बिबांधरा।
कमनीया लावण्या कमले देवि नमोऽस्तुते॥

10. रमाराधा रामपत्नी ज्ञानेश्वरी ब्राह्मी शिवा।
राज्यदात्री ज्ञानदात्री कमले देवि नमोऽस्तुते॥

11. सौभाग्यारोग्यदायिनी सर्वेश्वर्य प्रदायिनी।
महाविद्या त्रिपुरेशी कमले देवि नमोऽस्तुते॥

12. क्षोमंकारी क्षेमां क्षेम्या क्षमाशीला च क्षमावती।
क्षेमांगी क्षीरजा क्षीणमध्यां कमले देवि नमोऽस्तुते॥

13. दसवारं पठेद् सद्यः दुखैः प्रमुच्यते।
घोरदारिद्रणि तरति कमलादेव्याः प्रसादतः॥

॥ इति श्री श्रीधरानंदविरिचितं श्री कमला स्तोत्रं संपूर्णम्॥.


### कृतज्ञता ज्ञापन

हम स्वामी श्री श्री सत्यमित्रानन्दजी के हृदय से आभारी हैं, जिन्होंने दिनांक 1.5.97 को हमारी पुस्तकों पर अपनी विद्वतापूर्ण समीक्षा की और अपना आशीर्वाद प्रदान किया तथा दिनांक 20.9.97 को हमारे श्री दस महाविद्या शक्तिपीठ के पुनर्निर्माण के संकल्प की पूर्ति की कामना करते हुए कहा कि 'आप एक ऐसे सिद्ध पुरुष हैं, जो अकेले ही अपने संकल्प को पूर्ण करने में समर्थ हैं।'

– स्वामी श्रीधरानन्द

## शुभकामना सन्देश

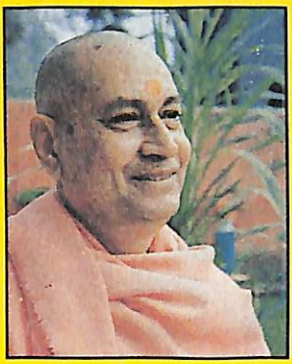

**स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि**

निवृत्त जगद्गुरु शंकराचार्य

ज्योतिर्मठ शाखा

सम्माननीय स्वामी श्रीधरानन्दजी महाराज,

सादर ॐ नमोनारायणम्,

अनेक वर्षों बाद आपसे मिलकर अति हर्ष हुआ। आपके आध्यात्मिक अनुभवों को आप देश - विदेश में वितरित कर रहे हैं, यह परम गौरव की बात है।

श्री दस महाविद्या, कुंडलिनी जाग्रति, ब्रह्मयोग पर आपकी पुस्तकें अत्युत्तम तथा सग्रहनीय हैं। वैज्ञानिक विवेचन से परिपूर्ण ग्रंथ साहित्य निधि के रत्न हैं। मैं उनके प्रचार - प्रसार की हृदय से कामना करता हूँ।

आप दीर्घायु हों, समस्त जगत का कल्याण कार्य सम्पन्न करते रहें, यही पराम्बा से प्रार्थना है।

भवदीय

**दि. 1.5.97** **स्वामी सत्यमित्रानन्द**

भारत माता मंदिर, हरिद्वार

**स्वामी श्रीधरानन्द**

**एवं**

**माँ कमलानन्द**

शिव - शक्ति और महाविद्याओं के अनन्य भक्त स्वामी श्रीधरानंद (डा. श्रीधर वाजपेयी) एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गणितज्ञ, भविष्य दृष्टा और मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता तथा मंत्र - तंत्र, अध्यात्म ज्ञान और अतीन्द्रिय विद्या के ज्ञानी और दिव्य तत्व मीमासंक हैं। गणित के 250 से अधिक शोधपत्रों और ग्रंथों के लेखक प्रो. वाजपेयी विश्व के सभी महाद्वीपों का अनेक बार भ्रमण कर चुके हैं और आपने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और गोष्ठियों में भाषण देकर अपनी विद्वता का परिचय देकर अपने देश का नाम उज्जवल किया है। आप एक सिद्ध, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक पथ प्रदर्शक के अतिरिक्त शंकर - पार्वती द्वारा प्रतिपादित लुप्त तंत्र ब्रह्मयोग और ब्रह्म तंत्र के ऋषि भी हैं। आप श्री महारुद्र स्तोत्र, श्री कमला स्तोत्र और अनेक मंत्र - तंत्रों के ऋषि भी हैं।